Vol. 24-No.-4- Part-3-2021 RNI No. -46269/87 ISSN-0975-4520 IMPACT FACTOR : 4. 015

IMPACT FACTOR : 4. 015

(Kala Sarovar Quarterly
Journal Approved by UGC Care List)

कला एवं धर्म शोध संस्थान,
लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी

कला सरोवर

KALA SAROVAR

(भारतीय कला एवं संस्कृति
की विशिष्ट शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक
डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी

कला सरोवर

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा संचालित

कला सरोवर (त्रैमासिक)

भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका

(Kala Sarovar Quarterly Approved Journal by UGC Care List)

प्रकाशक : कला एवं धर्म शोध संस्थान

बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,

बी.एच.यू., वाराणसी - 221005

Phone- 0542- 2310682, Mob.- 9451397205

मूल्य : 1000.00 रुपये (Vol. 24-No.-4-Part-3-2021)

वार्षिक सदस्यता शुल्क- 4000.00 रुपये

आजीवन सदस्यता शुल्क- 50000.00 रुपये

© प्रधान सम्पादक - कला सरोवर

ISSN : 0975-4520

Copyright (सर्वाधिकार सुरक्षित)

'कला सरोवर' शोध-पत्रिका में प्रस्तुत सभी लेखों, छायांकनों और रेखाचित्रों का अन्यत्र उपयोग प्रधान संपादक की पूर्व लिखित अनुमति से ही किया जायेगा। रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने है। शोध-पत्रिका संपादक परिवार का उन प्रकाशित लेखों से उनका सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक /शोधार्थी स्वयं जिम्मेदार होगा।

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

कला कम्प्यूटर मिडिया

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,

बी० एच० यू०, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

Email Id : kalasarovarresearchjournal@gmail.com

kalaprakashanvns@yahoo.in

मुद्रक :

मनीष प्रिन्टिंग प्रेस

बी॰ 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी, बी॰एच॰यू॰, वाराणसी

पिन- 221005, उ॰ प्र॰

परम्परागत और आधुनिक संचार माध्यमों का तुलनात्मक अध्ययन 85-88
राम भरोस साहू, डॉ0 ज्योति मेहता
धार जिले में निवास करने वाले अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्यावार स्थिति 89-91
संजना मुवेल
मालवा में बौद्ध स्थापत्य एक अमूल्य धरोहर 92-95
हरि ओम सिंह
An Inquiry Into the Monopolistic Market of Refrigerators in Rajsthan 96-99
Vandana Yadav
Policy Paralysis About the Legal Protection of Elderly Refugees : A Review From Human Rights Perspective 100-105
Dr. Pradip Kumar Das, Tanmoy Roy
भारत बांग्लादेश संबंध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 106-108
सनिश
मानव स्वरूप की दार्शनिक विवेचना 109-111
अनिता धाकड़
गाँधी जी के राम राज्य का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 112-114
रविंद्र कुमार
Satisfaction Towards Discotheque At Raipur Chhatishgarh 115-119
Mr. Ravi Kishor Agrawal, Dr. Ram Pravesh, Ms. Shilpa Rajak
Multiplicities of methodological aspects of measuring the student engagement construct – A disparity in the field of engagement research 120-124
Raj Kumar Pal, Nil Ratan Roy
Catharsis Through Confessional Poetry 125-128
Ivy Dasgupta, Dr. Jyoti Sharma
A Study on the Prevalence of Postural deformities Among School Children 129-135
Shrikant, Purashwanipushpendradr
वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली 136-138
भावना झा
कोविड-19 का आनलाईन शॉपिंग पर प्रभाव जनपद नैनीताल के विशेष संदर्भ में 139-144
डॉ0 विजय कुमार
Cultural Ethos in So Many Hungers! and Godan 145-149
Dr. Samira Sinha
***Surya* : The Vedic God** 150-154
Dr. Sharma Bhanu Bhupendra
Role of Mutual Fund in Accelerate the Financial System of India 155-159
Dr. Jaswant Saini
Blended Learning: An Evidence for Achieving Learning Outcomes 160-164
Pooja Jaswal, Dr. Biswajit Behera

Dogo Rangsang Research Journal
(A Bilingual Research Journal, Indexed in UGC-Care list)
Vol-11, Issue. 01 No.02 January 2021
ISSN : 2347-7180

DOGO RANGSANG
Research Journal
দগো ৰাংছাং
গৱেষণা পত্ৰিকা

CHIEF EDITOR (HON.):
Dr. Upen Rabha Hakacham
EDITORS (HON.) :
Dr. Lalit Chandra Rabha
Dr. Neeva Rani Phukan

মুখ্য সম্পাদক (অবৈতনিক):
ড° উপেন ৰাভা হাকাচাম
সম্পাদকদ্বয় (অবৈতনিক) :
ড° ললিত চন্দ্ৰ ৰাভা
ড° নিভা ৰাণী ফুকন

A Peer Reviewed Bilingual Research Journal
(Indexed in UGC-CARE List)

ISSN 2347-7180

DOGO RANGSANG RESEARCH JOURNAL
দগো ৰাংছাং গৱেষণা পত্ৰিকা

Vol. 11 Issue. 01 No. 02

January 2021

Chief Editor (Hon.) : Dr. Upen Rabha Hakacham
Editors (Hon.) : Dr. Lalit Chandra Rabha
Dr. Neeva Rani Phukan

মুখ্য সম্পাদক (অবৈতনিক) : ড° উপেন ৰাভা হাকাচাম
সম্পাদকদ্বয় (অবৈতনিক) : ড° ললিত চন্দ্ৰ ৰাভা
ড° নিভা ৰাণী ফুকন

Dogo Rangsang Research Society
Reg. No. KAM-M/263/L/ 595 of 2015-16
Gauhati University Campus
Guwahati - 781014

INDEX

S.No	TITLE	Page No
1	*DATTANI, THE VOICE OF THE VOICELESS*	1
2	BUILDING A RESILIENT WORKFORCE AND ITS IMPACT	4
3	CONSUMER'S AWARENESS ON HSN CODES AND GST RATES ON COMMON HOUSEHOLD HYGIENE WITH SPECIAL REFERENCE TO JAGTIYAL DISTRICT	13
4	COMPRATIVE ANAYLSIS BETWEEN THE NEW TAX REGIME (BUDGET 2020)AND OLD TAX REGIME(EXISTING) FOR INDIVIDUAL	23
5	PERCEPTION OF TRADITIONAL MEDICINE BEFORE AND DURING COVID-19	31
6	A STUDY ON CUSTOMER RETENTION AND SURVIVAL OF BANKING	35
7	A STUDY ON TEACHING APTITUDE AMONG B.ED. TRAINEE TEACHERS OF WEST BENGAL TEACHER EDUCATION INSTITUTIONS	46
8	TENDENCY IN THE ANATOMY OF INDIAN FOOD PROCESSING INDUSTRY	52
9	IMPACT OF ORGANISATIONAL CULTURE, CLIMATE AND ROLE STRESS TOWARDS JOB SATISFACTION OF EXECUTIVES IN ONGC, KARAIKAL	59
10	A REVIEW BASED STUDY ON PROBLEM SOLVING ABILITY IN MATHEMATICS WITH RESPECT OF GENDER DIFFERENCES AMONG SCHOOL STUDENTS	66
11	THE EAST AND THE WEST CONFLICT IN AMITAV GHOSH'S NOVEL *THE CALCUTTA CHROMOSOMES*	71
12	FACTORS AFFECTING ONLINE SHOPPING IN THANJAVUR DISTRICT	76
13	GREEN MARKETING AND ITS IMPACT ON CONSUMERS	81
14	LEVERAGING DISASTER MANAGEMENT: ROLE OF LOGISTICS IN PREPAREDNESS, RESPONSE & MITIGATION STAGES	84
15	EFFECTIVENESS OF COMPUTER ASSISTED MODULE IN TEACHING AND LEARNING CHEMISTRY AT HIGHER SECONDARY LEVEL	92
16	"WOMEN IN AGRICULTURE : A STUDY OF INDIA"	96
17	CHANGING DIMENSIONS OF RIGHT TO PRIVACY IN INDIA: A PARADIGM SHIFT	100
18	EMERGENCE FROM TRADITION TO MODERNITY: A STUDY OF WOMEN CHARACTERS IN THE SELECTED WORKS OF JHUMPA LAHIRI	105
19	A STUDY ON THE PERFORMANCE AND SATISFACTION LEVEL OF HOSPITAL EMPLOYEES IN TAMILNADU	108
20	AN EMPIRICAL STUDY ON CONSUMER AWARENESS ON BANKING PRODUCTS WITH SPECIAL REFERENCE TO BUSINESS CORRESPONDENCE IN THE STATE OF TELANGANA	114
21	THE CASE STUDY OF JET AIRWAYS: A STARTUP FAILURE IN INDIA	127

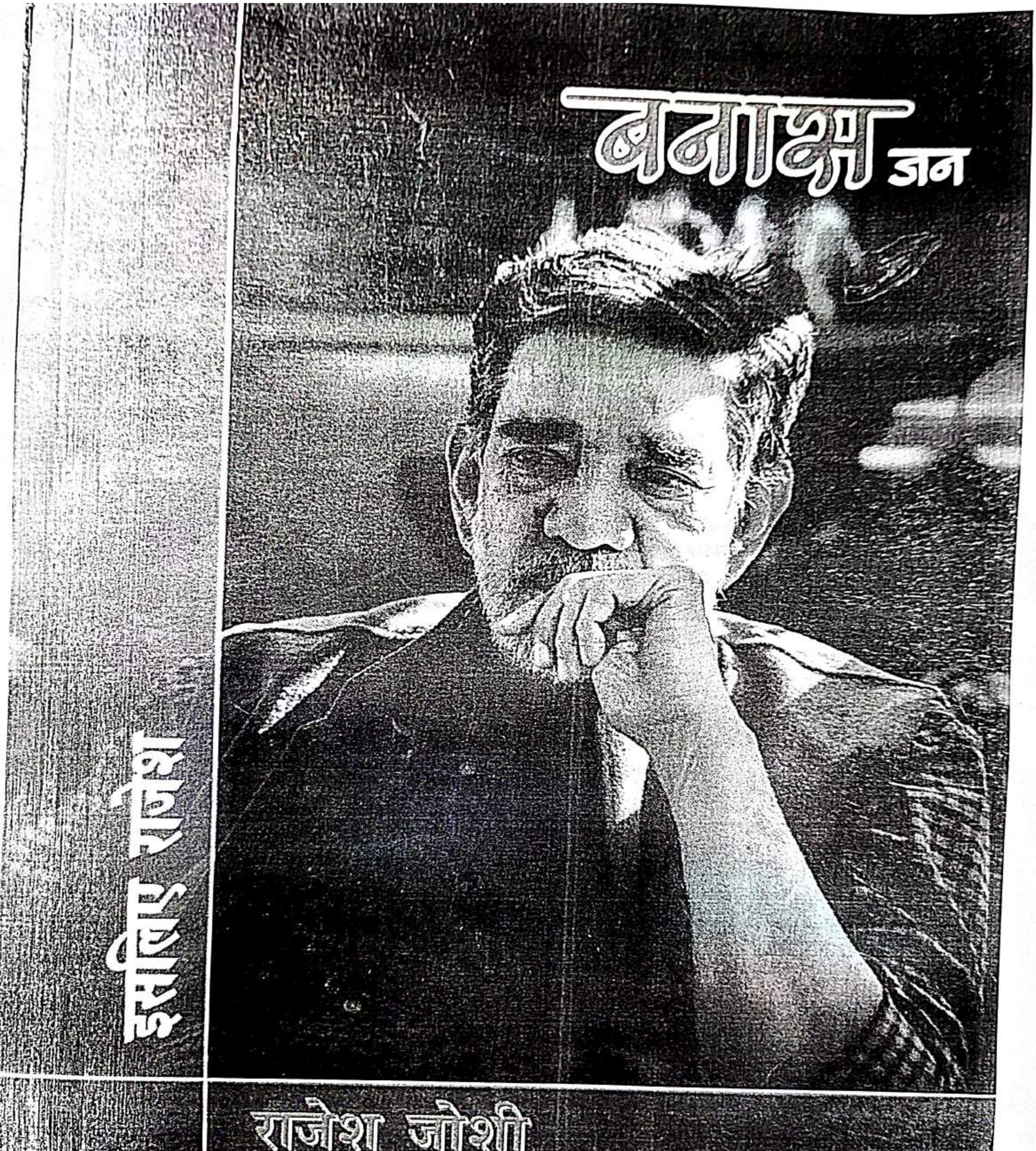
बनास जन
इसलिए राजेश
राजेश जोशी

बनास जन
जनवरी 2022

अव्यावसायिक
अंक 51, वर्ष 14

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. ममता कालिया
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 200 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–250 रुपये
400 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–450 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
Our A /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch Name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

शिरीष कुमार मौर्य

शिरीष तुम्हारी उम्र क्या रही होगी उस वक्त?

जब राजेश जोशी कविता में दिखने शुरू हुए होंगे, तब मेरी उम्र 'एक दिन बोलेंगे पेड़' संग्रह की पहली ही कविता 'गेंद' में आए बच्चे के बराबर रही होगी। आश्चर्य से देखता हूँ कि यह कवि कितना पुराना है। इसके पुरानेपन में कितनी चमक है। उससे भी अधिक हैरत यह कि यह पुराना कवि कितना तो नया है। किसी नौजवान कार्यकर्ता सरीखा बौखलाता समकालीन इस संसार में रह-रहकर क्रुद्ध हो जाता। अन्याय और अनाचार के विरुद्ध भाषा में प्रतिरोध की रह-रहकर बाधित हो जाती बिजली सुधारता, मानो कहता हमसे कि संभालो, इतना तो संभालो उसे, जो तुम्हारा अपना प्रकाश है। राजेश जोशी का आज की कविता में होना, किसी वरिष्ठ अग्रज से अधिक सच्चे संगी-साथी का होना है और एक बहस का होना है, जो हमें बेंच-कुर्सी से ऊपर उठा कर किसी जीवित सोचते-बोलते मनुष्य में बदल देती है।

अवश्य ही राजेश जोशी की कविता को आरम्भिक पहचान उनकी राजनीति ने दी। मुखर वैचारिक वक्तव्य वाली उनकी कुछ कविताएँ वामपंथी कार्यकर्ताओं के लिए दस्तावेज सरीखी हो गई हैं। वाम आंदोलनों में दीवार पर और पोस्टर्स में राजेश जोशी की कविताओं की अनिवार्य उपस्थिति रही। एक दौर में तो उन्हें सिर्फ कविता-पोस्टर का कवि कहने की अवमानना भी शुरू हुई। राजेश जोशी की कविता को केवल एक राजनीतिक बयान मानने का चलन बढ़ा। राजेश जोशी ने शायद ही कभी इस चलन और अवमानना पर कोई आपत्ति की हो। कविता की अवमानना, न्यायालय की अवमानना से कम बड़ी चीज नहीं होती पर लोग करते हैं। अच्छे कवि इस अवमानना का कोई संज्ञान नहीं लेते, मुझ जैसे कविता के पाठक लेते हैं। यह अवमानना दरअसल आलोचना के मुखौटे किंवा आजकल की स्थितियों और भाषा में कहें तो मास्क पहन कर सामने आती है। कला, भाषा और राजनीति की तीन लेयर वाला मास्क अब प्रचलन में है, कोई तो एन 95 भी है....

कोविड की महामारी में बहुत लोग खो गए। कई लेखक-कलाकार भी अव्यवस्था की भेंट चढ़ गए। पद्मश्री प्राप्त लेखक-कलाकार भी जरूरत होने पर अस्पताल में एक बिस्तर नहीं पा सके....रह-रहकर राजेश जोशी के समकालीन मित्र कवि वीरेन डंगवाल की तेज आवाज़ आती है–किसने आखिर ऐसा समाज रच डाला है? राजेश जोशी इधर स्वयं इस महामारी का शिकार हुए और अब स्वस्थ हैं। हमारे कवि ने हर मोर्चे पर लड़ाई लड़ी है। वे न केवल बहस में हैं, बल्कि जनहित में कुछ जरूरी बहसों के जनक भी हैं। उनकी कविता बहस करती है, बहस में रहती है और पाठक को अपने साथ बहस में ले जाती है।

''दरवाजे से बाहर जाने से पहले
अपने जूतों के तस्में बाँधने के लिए मैं झुकता हूँ
रोटी का कौर तोड़ने और खाने के लिए
झुकता हूँ अपनी थाली पर
जेब से अचानक गिर गई कलम या सिक्के को उठाने
झुकता हूँ

शिरीष कुमार मौर्य : कवि-आलोचक। अनेक पुस्तकें।
वसुंधरा-III, भगोतपुर तड़ियाल, पीरूमदारा, रामनगर, जिला-नैनीताल (उत्तराखंड) 244715
मो. : 9927164797

346

बनास जन

100

फणीश्वरनाथ रेणु

शताब्दी स्मरण

परामर्श : प्रो. नवलकिशोर
प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

आवरण-चित्र : निकिता त्रिपाठी, प्रयागराज

कला-पक्ष : मयंक शर्मा, उदयपुर

लेजरटाइप सेटिंग : सुभाष कश्यप, दिल्ली मो. : +91–9911163286

सहयोग राशि : 200 रुपए (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–230 रुपये
400 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–430 रुपये
300 रुपये–वार्षिक सहयोग (व्यक्तिगत)
600 रुपये–वार्षिक सहयोग (संस्थागत)
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

संझा-तारा डूब रहा है

जो गरीब है, उसे अपने गाँव से आगे का कुछ पता नहीं
कम गरीब है, जो उसने देखा है पूरा जिला
सिर्फ अनाचारी जालिमों ने देखे हैं राज्य और राष्ट्र
—असद जैदी

मैं सोचता हूँ, जो हिंदी कहानी की आँचलिकता रही, उसमें भी यही तो तर्क था, जो अनदेखा रहा। आँचलिकता हिंदी कहानी की उपलब्धि ही नहीं, कभी आरोप की तरह भी मढ़ी जाती रही है। कई कथाकार किनारे कर दिए गए, कई को किनारे करने के लिए उनमें आँचलिकता खोज ली गई। यह हिंदी साहित्य के भीतर की दुहरी राजनीति थी। क्रूरता और नृशंसता हिंदी की पॉलेमिक्स का हिस्सा बनते गए। याद कीजिए जब रेणु लिख रहे थे, तब राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश भी लिख रहे थे और इसे अलग से रेखांकित किए जाने की आवश्यकता है कि निर्मल वर्मा भी लिख रहे थे—यह उस समय हिंदी कहानी किंवा नयी कहानी का मंच था। कस्बों की, नगरों-महानगरों और मध्यवर्ग की कथाएँ-उपकथाएँ हिंदी का हासिल थीं और निपट गाँव की कथाएँ कथ्य से रूमानी और भाषा में अबूझ मानी जा रही थीं। गौरतलब है कि तब नामवर सिंह के आकलन और आकांक्षा की दशा और दिशा क्या थी—लोक जीवन का मुग्ध चित्रण अपने आप में कोई बहुत ऊँची चीज नहीं है और न साध्य ही। इस सामग्री के आधार पर जागरूक पाठकों का मन ज्यादा देर तक नहीं बहलाया जा सकता। लोक-जीवन के अंतर्वैयक्तिक सामाजिक संबंधों की समझ जैसे-जैसे बढ़ती जाएगी, ये कहानीकार भी प्रौढ़ कहानियाँ दे सकेंगे। फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, केशव मिश्र, शिवप्रसाद सिंह की कहानियों से इस दिशा में आशा बँधती दिखाई दे रही है। (कहानी, नववर्षांक, जनवरी, 1956 पृष्ठ 19-20)

मैं इस लेख को तुलनात्मक समीक्षा बना देना नहीं चाहता हूँ, लेकिन दो-तीन बातें करना जरूरी है। 'लाल पान की बेगम' और 'परिंदे' का प्रकाशन-वर्ष एक ही यानी 1956 है। निर्मल वर्मा की कहानी न्यूजीलैंड की लेखिका कैथरीन मैंसफील्ड (Katherine Mansfield) के एक साधारण कथन को असाधारण की तरह उद्धृत करते हुए होती है। मृतकों के बारे में यह कथन कहानी की भूमिका जैसा है। मुझे न कथन से दिक्कत है, न कहानी से—मैं बस दो संसारों को देख रहा हूँ। दूसरे संसार में कहानी सीधे मुख्य पात्र यानी बिरजू की माँ के उल्लेख से शुरू होती है। इसका क्या करें कि कहानीकार को गाँव के बाहर का कुछ पता नहीं...रेणु को पता है पर लाल पान की बेगम के किस्सागो को नहीं पता।

मैं खुद से पूछता हूँ कि अच्छी सुघड़ कहानी होने के बावजूद परिंदे किस सामाजिक समस्या को व्यक्त करती है, जिसका देश के बड़े तबके या तो आम जनजीवन से कोई वास्ता हो? मैं लतिका और बिरजू की माँ को आमने-सामने नहीं रख रहा हूँ, पर वे अगल-बगल तो हमेशा रहेंगी। रेणु से आशा बंधती दिखाई दे रही थी और निर्मल वर्मा उस नएपन के अग्रदूत साबित थे, जिसके सूत्र कहानी में खोजे जाने लगे थे? मैं इस वाक्य में यह प्रश्नवाचक लगा रहा हूँ वरना तो उस वक्त में ही मेरे प्रिय आलोचक

शिरीष कुमार मौर्य : सुपरिचित कवि और आलोचक। अनेक पुस्तकें।
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डी.एस.बी.परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
मो. : 91-9456142405 ईमेल : shirish.mourya@gmail.com

बनास जन
https://ugccare.unipune.ac.in
कविता प्रसंग

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. ममता कालिया
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला-पक्ष : निकिता त्रिपाठी, प्रयागराज

सहयोग राशि : 150 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–175 रुपये
300 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–325 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह-संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

कठिन दिनों के कवि बार-बार लौट कर आते हैं

हिन्दी में कठिन दिनों के कवियों का एक अपना हिसाब है मेरे पास। दूर इतिहास में कबीर और निकट इतिहास में निराला-मुक्तिबोध-शमशेर-त्रिलोचन के कठिन दिन। इन कठिन दिनों के हिसाब में कितने ही योग-महायोग निजी और समाज के कठिन दिनों के हैं। कितने ऋण और ब्याज भटक जाने के और कितने गुणा वापस लौट आने के। ये प्यारे पुरखे–ओजस्वी, जीवन-समाज-राजनीति के ताप से भरे, इनकी तो छाया में भी धूप लगती है। हैरत नहीं कि मुझ पहाड़ के वासी को धूप प्रिय है। इन कवियों के बाद अपने ही ढंग से जनता की राजनीति करने वाले धूमिल, जो चले गए। वेणुगोपाल, आलोक धन्वा और मनमोहन–जिन्हें बस एक्टिविस्ट कवि कह दिया गया, बिना उनके मर्म को जाने। आलोक धन्वा ने 'दुनिया रोज बनती है' के बाद वह मर्म खो-सा दिया। मनमोहन में वह बाक़ी रहा, पर दिखाई कम-कम दिया। वेणुगोपाल अपनी कविता की दुनिया से इस तरह मिलते-बिछुड़ते रहे कि लेखन में निरन्तरता की अमानवीय अवधारणा के ग़ुलाम आलोचक उन पर एकाग्र नहीं हो सके। कठिन दिनों के इस कवि वेणुगोपाल की कविताओं की अंतिम किताब 'और ज़्यादा सपने' साल 2014 में छपकर आई। किताब के साथ अंतिम का विशेषण सहमा देने वाला है। उस पर किताब का नाम....यह किताब भी अब अनुपलब्ध है। इस किताब में अधिकतर कविताएं 1982 के आसपास की थीं, 2008 में वेणुगोपाल विदा हुए–बीच का यह लम्बा अन्तराल हमारी कथित साहित्यिक दुनिया की कृतघ्नता का आख्यान हो सकता है। इस किताब को होना चाहिए, पर यह नहीं है। मैं इन कविताओं की स्मृति को बनाए रखना चाहता हूँ इसलिए इस लेख का आधार यही कविताएँ हैं।

* * *

'वे हाथ होते हैं' की क्रांतिसम्भवा कविता 'चट्टानों के जलगीतों' के दुर्धर्ष जीवनकाल गुज़रते हुए अंतिम ज़्यादा कठिन दिनों में 'और ज़्यादा सपनों' को पुकारती हुई चली गई लगती है। लेकिन हम सब जानते हैं कठिन दिनों के कवि बार-बार लौटकर आते हैं–हमें उनकी ज़रूरत होती है। वेणुगोपाल भी लौटकर आए, लेकिन हिन्दी समाज उनके लौटने को सहेज नहीं पाया है। उनकी आवाज़ आ रही है। वे अपनी अनुपस्थिति में और भी अधिक महसूस हो रहे हैं। हम इधर समाज और राजनीति में कमाल के दिन देख रहे हैं, यह 'कमाल का जादू' वेणु की कविता में अपने रहस्य की केंचुली बहुत चुपचाप उतार जाता है।

कमाल का जादू है कि
तीर पलट कर निशानेबाज को ही धराशायी करता है

हर बार

सन्न हैं दर्शक
और टार्गेट ताली बजाने लगता है (कमाल का जादू)

मैंने ऊपर 'चुपचाप' पद का प्रयोग किया है, जिसे आम तौर पर एक्टिविस्ट कहे गए कवियों के

शिरीष मौर्य : सुपरिचित कवि और आलोचक। अनेक पुस्तकें।
वसुंधरा III, भगोतपुर तड़ियाल, पीरूमदारा, रामनगर, ज़िला-नैनीताल - 244715 (उत्तराखंड)
मो. : 9927164797

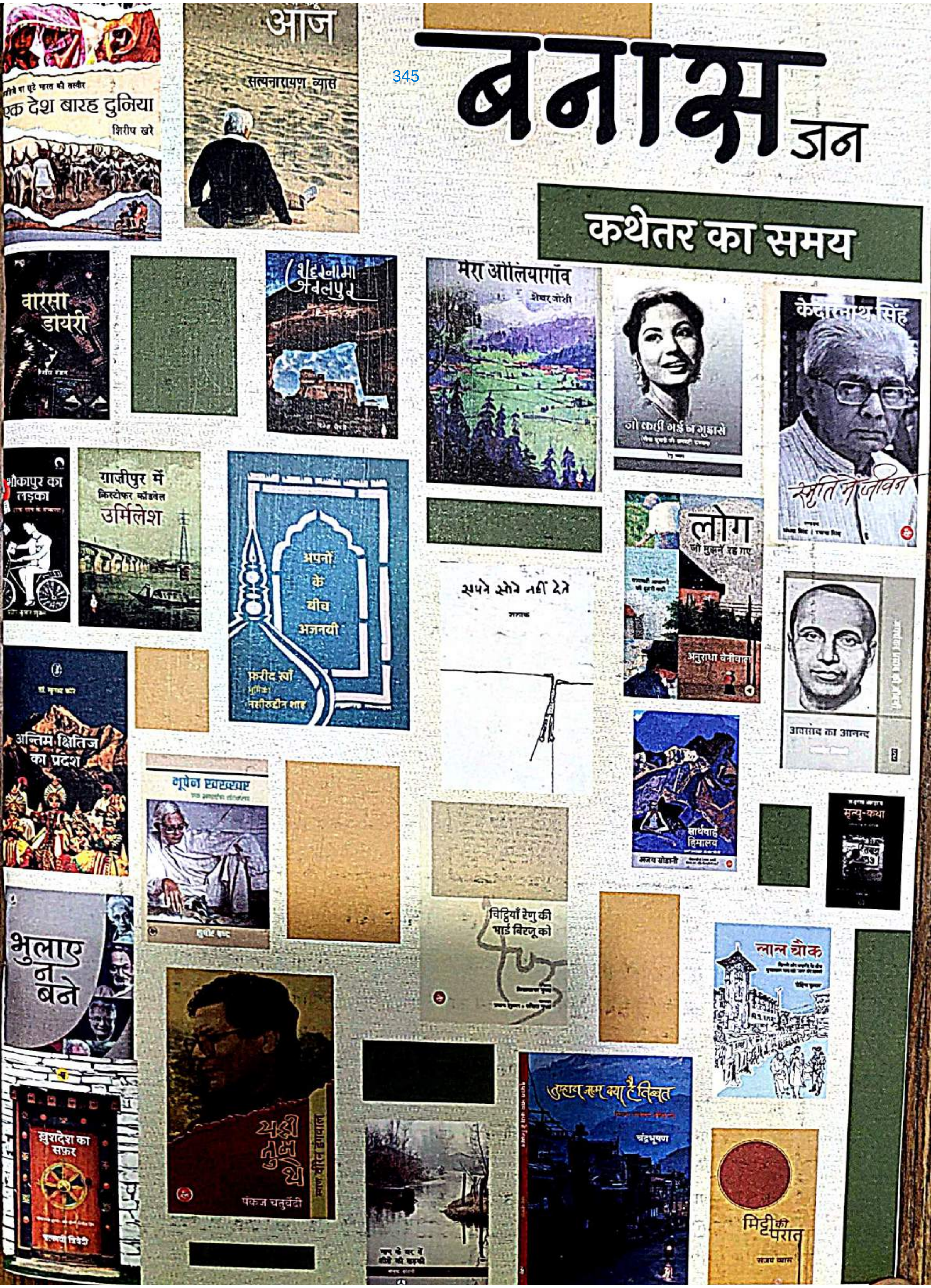
बनास जन
कथेतर का समय
एक देश बारह दुनिया
शिरीष खरे
आज
सत्यनारायण व्यास
वारसा डायरी
मेरा ओलियागाँव
शेखर जोशी
जो कही गई न मुझसे
केदारनाथ सिंह
स्मृति में जीवन
गाजीपुर में
क्रिस्टोफ़र कॉडवेल
उर्मिलेश
अपनों के बीच अजनबी
फ़रीद ख़ाँ
भूमिका : नसीरुद्दीन शाह
सपने सोने नहीं देते
लोग जो मुझमें रह गए
अनुराधा बेनीवाल
अवसाद का आनन्द
अन्तिम क्षितिज का प्रदेश
भूपेन खख्खर
चिट्ठियाँ रेणु की भाई बिरजू को
सार्थवाह हिमालय
अजय सोडानी
मृत्यु-कथा
लाल चौक
भुलाए न बने
तुम्हारा नाम क्या है तिब्बत
चंद्रभूषण
पंकज चतुर्वेदी
मिट्टी की परात

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. के. सी. शर्मा, चित्तौड़गढ़
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–75 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें।
'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात [illegible]

यात्रा

अपने आपको जाने बिना न प्रेम है, न आज़ादी — गौरव भारती — 5

तुम्हारा नाम क्या है तिब्बत — प्रीति सुषमा — 8

हिमालय का आख्यान : सार्थवाह हिमालय — रश्मि शाह — 12

दो दिशाओं में दो यात्राएँ — नीरज — 16

रिपोर्ताज

भारत के यथार्थ की सघन तस्वीर : एक देश बारह दुनिया — शिशिर शर्मा अनादर — 21

'जन्नत' की एक अनकही दास्तौ — अनुपम कुमार — 25

शहरनामा

किस्सागोई की शक्ल में दास्तान-ए-शहरे जिन्दगी — आबिद हुसैन — 29

संस्मरण

भीकापुर का लड़का : जीवन और संघर्ष का प्रकाश — मेघा नैलवाल — 33

'वही तुम थे' : स्मृतिविन्यस्त प्रयोगधर्मी नायाब किताब — रविरंजन — 36

भावनाओं की भूमि पर पल्लवित स्मृतियों का पुलिंदा — ऊर्जा श्रीवास्तव — 40

मूर्त होते किरदार — स्मृति शुक्ला — 45

स्मृतियों में दर्ज साहित्य और पत्रकारिता की दुनिया — लोह कुमार — 49

आत्मकथा

चना का ओलियागाँव — अर्पिता राठौर — 53

संघर्ष से सफलता तक — विनीत कांडपाल — 57

साम्प्रदायिक प्रोपेगैंडा और उसका मुकम्मल जवाब — मिथिलेश प्रियदर्शी — 62

जीवनी

कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा — पुनीत कुमार राय — 67

पेंटर, लेखक और समलैंगिक दुनिया — अवंतिका शुक्ला — 72

तितलियाँ उड़ती रहें, ताकि फूल हँसते रहें — शशिकला राय — 77

डायरी

समाज विमुख आत्मलीनता का संकल्प — आनन्द पांडेय — 82

साहित्यिक सर्जनात्मकता का मर्म — सूरज कुमार — 86

वैश्विक सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन का दस्तावेज — जे. आत्माराम — 90

पत्र

जहाँ-जहाँ रेणु बसते हैं — स्नेह सुधा — 94

निबंध

यादों के जुगनुओं से झिलमिलाती 'मिट्टी की परात' — कालूराम परिहार — 98

नये रंग

मृत्यु-कथा : मणिकर्णिका और दंडकारण्य का फर्क — कनुप्रिया झा — 103

नदी के जल के वास्तविक दावेदारों का इतिहास — आशीष तिवारी — 107

Skin Colour Bias in Hindi Film Songs: A Reflection of Racism in Indian Society

–Dr. Poonam Bisht

Indian cinema has covered a long journey spanning over a century. Hindi films have served entertainment, information and varied emotions to the audiences, touching upon different aspects of their lives. Cinema is both a reflection of the existing social norms and a catalyst for changing the attitude, behaviour and opinions of millions of people.A deep-rooted preference for fair skin is prevalent in the Indian society as commonly witnessed in both personal and professional spheres. The social stigma and discrimination attached with the dusky complexion in a tropical country like India sounds bizarre as majority of the people are expected to be dark skinned due to the hot and humid weather and genetics.However, the societal colourbiasis also evident in various popular songs of Hindi commercial cinema, right from its advent a century ago to the present times. A content analysis of thirteenpopular Hindi songs from the movies of the past eight decades (1950-2020) by the present study reveals that the racist content of the Hindi film songs contributes towards promoting 'colourism' in society by showcasing fair complexion as the benchmark for beauty and superiority. The study also highlights the interplay between societal influences on cinema and the latter's impact on societyconcerning the skin colour bias.

Key Words: Hindi film songs, skin colour bias, colourism, racism.

Several researchers have conducted deep investigation into the issue of colourismprevalent in society and various factors linked to the racial bias.An investi-gation by Chen and Francis-Tan (2021) reveals that East Asia emerged as the global region with the highest level of skin colour bias especially against dark and medium-skinned job applicants as compared to the light-skinned candidates. The results corroborate with the findings of several other studies (Burton et al., 2010, Hunter, 2007, Goldsmith et al., 2007, Hamilton et al., 2009, Hill, 2002, Glenn, 2008, Rondilla & Spickard, 2007, Ayyar & Khandare, 2013, Dixon & Telles, 2017, and Monk, 2015) which establish evidence of social discrimi-nation against dark skinned people.

Introduction

Cinema is a powerful mass medium with a potential to touch the lives of millions. It is not only a reflection of the existing socio-cultural norms but also a catalyst for bringing social transformation. Hindi commercial cinema has been serving entertainment, information and emotions for over a century while also playing an important role in influencing public opinion, constructing images and reinforcing dominant socio-

cultural values and norms. Music has always been an integral part of the Hindi filmsand used by the filmmakers as a tool to showcase varied emotions, ranging from love, longing, lust, romance, happiness, fear, anger and sorrow. However, the Hindi film songs along with the other essential elements of cinema, namely, script, dialogues, visuals, portrayal of characters etc. have faced criticism for their dubious role in promoting racial bias and discrimination.

The problem of colour biasas indicated by the preference for fair complexion and discrimination against the dark-skinned people is commonly witnessed in the Indian society for a very long time. Some experts (Sharma, 2016, Mittal, 2006, Chakravarty, 1989) call it a product of colonial prejudicesobserved during the British rule in India which ultimately became a deep-rooted and integral part of the Indian mindset.Throwing light on the preference for lighter skin tone in India, Thappa and Malathi(2014)point at a long history behind the obsession with skin color, owing to caste and culture, while stressing that the desire for lighter skin originated from Hinduism's social hierarchal structure in which those belonging to higher castes typically had "fairer"complexions and are better placed in the political hierarchy.

The Indian matrimonial advertisements seeking fair-complexioned beautiful wife, the comparisons commonly drawn between siblings based on the skin tone by the family elders, racial bullying incidents in the schools, prejudices against the dark-skinned candidates appearing for job interviews, skin-tone based selection or rejection in the modeling and entertainment industry are just a few examples of the widespread racial discrimination prevalent in the society.

The interplay between societal influences on cinema and the latter's impact on society has always been a matter of debate. While Banaji (2006) describes Hindi cinema as a cultural and ideological force which both reflects and constructs the social reality, Kaur (2002) hints at a reciprocal relationship between cinema and society. A study by the World Health Organization reveals that Indian cinema is a powerful medium influencing the behavior and attitude of the youth in their routine lives (Vasan, 2010).

Throwing further light on this issue, Mishra (2015) points out that the beauty ideals may have been ingrained in the public mind through colonization howeverthey were deepened through the fair skinned images promoted by media and popular culture. He further states that thecolour-biased images are now influencing and shaping the behavioral practices and preferences, while also harming the cultural and geographic diversity of the Indian population.

Unfortunately, right from its advent to the present times, Hindi cinema has further contributed towards promoting the racial discrimination and has miserably failed to address the problem in a sensitive manner while succumbing to the existing social prejudices based on colour and caste.Some of the most talented artistes of the Hindi cinema such as Naseeruddin Shah, NawazuddinSiddiqui, Om Puri and Nandita Dashave often spoken on various forums about the bias and discrimination practiced by the Hindi film industrybased on facial features and skin tone. The huge demand in the Indian market for skin-lightening products ranging from bleaching

creams, oils, soaps and serums manufactured by the world's most renowned cosmetic companies is equally disturbing in view of the fact that India is a tropical country and majority of the people here are expected to be dark skinned due to the hot and humid weather and genetics.

Even the most popular movies and songs of the Hindi cinema glorify and present fair skin as the benchmark for beauty while openly showing step-motherly treatment towards the dark skinned characters. The wide public acceptance and popularity of some of the most racist songs of the Hindi cinema promoting discrimination and body shaming is a glaring example of the prejudiced mindset of the Indian population. In view of the huge popularity of the Hindi film songs across all generations, that is, children, youth and elderly, it becomes imperative to conduct a thorough examination of some of the most popular Hindi songs of the past eight decadesto identify the elements of 'colourbias' and find out if these songs are promoting and / or reinforcing the existing racial bias in the Indian society.

Review of Literature

The Cambridge English Dictionary defines colourism as "dislike and unfair treatment of the members of a particular racial group who have a darker skin colour than others."

Several researchers have conducted deep investigation into the issue of colourismprevalent in society and various factors linked to the racial bias.An investigation by Chen and Francis-Tan (2021) reveals that East Asia emerged as the global region with the highest level of skin colour bias especially against dark and medium-skinned job applicants as compared to the light-skinned candidates. The results corroborate with the findings of several other studies (Burton et al., 2010, Hunter, 2007, Goldsmith et al., 2007, Hamilton et al., 2009, Hill, 2002, Glenn, 2008,Rondilla&Spickard, 2007,Ayyar&Khandare, 2013, Dixon &Telles, 2017, and Monk, 2015) which establish evidence of social discrimination against dark skinned people.

Various experts such as Bettache(2020), Dixon &Telles(2017), Glenn (2008),and Hunter (2007) identify globalization, European colonialism and historical class/colour associations as the three key factors contributing towards racial discrimination in the Asian countries. However, the problem of colour bias is not restricted to the Asian region. Various studies (Espino & Franz, 2002, Painter et al., 2016, Rosenblum et al., 2016,Perreira&Telles, 2014,Telles, 2004, Villarreal, 2010)highlight the racial discrimination against the Latino and Asian American minorities living in the United States. Bakhshi and Baker (2011) throw light on the appearance-based discrimination against Indians living in the United Kingdom.

Several studies highlight the role of media and popular culture in promoting and reinforcing 'fair skin' as the benchmark for feminine beauty.The beauty ideals of 'whiteness' are promoted through movies, television shows, magazines, advertising, Internet and celebrity culture (Venkataswamy, 2013,Glenn, 2008, Harrison & Thomas, 2009,Jha& Adelman, 2009, Utley &Darity, 2016,Baumann, 2008,Cullity, 2002, Mukherjee,2020, and Rajesh, 2013).Bettache (2020) hints at the close links

between the conceptions of beauty and skin tone, and the social expectations attached with physical appearance of women.

Through promotion and projection of fair skinned characters as the most desirable women and men, the popular media pushes general population towards using fairness products.Adbiet al. (2021) point out at a recent study of Indian women which finds association between feelingsof disempowerment and the increased demand for skin-lightening products.Glenn (2008) reveals that East Asia is the world's largest market for skin whitening products.

A content analysis of popular Punjabi rap songs (Bisht, 2018) reveals that the songs promoted stereotyped image of woman as 'object of beauty', who is evaluated,pursued and chosen by men on the basis of her skin complexion and other physical features. The lyrics and visuals carried racial remarks glorifying the fair skin tone of the female characters. Words like *gori, chitti* (fair complexioned) and brown *rang* (darker skin tone) were frivolously used in these popular songs.

There is a plethora of literature available on the role of media and advertising in promoting skin tone biashowever there is a clear dearth of research into the role of popular Hindi film songs in facilitating the existing social preference for 'lighter skin tone' despite the fact that music is considered as the heart and soul of cinemawith the potential of influencing the thoughts, opinions and emotions of millions of people. The present study has attempted to fill in this void.

Methods and materials

The purpose of the present study is to examine the skin colour biasin the popular songs of the Hindi commercial cinema. Another aim is to find out whether the Hindi film songs contribute towards promoting 'colourism' in society.The study analyzed the content of thirteenpopular Hindi film songs from the movies releasing over the past eight decades (1950-2020).The theme,lyrics, visuals andcharacter portrayal in the selected songs were thoroughly studied to identify the elements of racism based on skin tone bias. The study also highlights the interplay between societal influences on cinema and the latter's impact on society in the context of colourbias.

Results and Discussion

The findings of the present study established the presence of colourism in the Hindi film songs right from the black and white era to the present times. The content analysis of the lyrics, visuals, themes and character portrayal of thirteen popular Hindi songs selected from the Bollywood commercial movies released over the past eight decades revealedhuge colour bias and glorification of the fair skin tone as the epitome of beauty. In addition, the study also found evidence of attempts by the makers of Hindi film songs to associate fair skin complexion with a sense of superiority and power. Words with racial connotation like *gori, gore and goriya*referring to the fair complexioned characters and*kali, kala*etc. to denotedark skinned characters are frivolously and frequently used in these popular songs. Also, body shaming of characters based on their dark skin tone is also evident in several songs selected under the study. The resultsfurther revealed an utter failure of the

Hindi film music in addressing the racism prevalent in the Indian society. Rather, it has contributed towards reinforcing the deep-rooted colour biasamong the audiences over the years through its racist content.

Following are the highlights of the results and related discussion:

Fair skin is benchmark for beauty in Hindi film songs

A major preference for fair skin complexion is heavily evident in the content analysis by the present study. Words filled with racial connotation like *gori, goriya, gore, kali, kala, shyam rang*, white face, *chittiyan kalaiyan* were frequently used in thepopular Hindi film songs selected for this study. In a massively popular song titled "Gore Gore Oh Banke Chore" from the movie 'Samadhi'released in 1950 during the black and white era, actress NaliniJaywantis seen performing on stage with another girl who is dressed as a man and are shown romancing and addressing each other as *goregore oh bankechore* (fair and handsome hunk) and *gorigori oh bankichori*(fair and lovely lady). In another popular song titled "AajaPiyaTohePyar Dun" from the black and white movie 'BaharonKeSapne' released in 1967, the female lead Asha Parekh is shown offering her *goribaiyan*(fair skinned arms) to her beloved played by Rajesh Khanna to cheer him up.In a song titled "Gore Rang Pe Na ItnaGumanKar" from the movie 'Roti' released in 1974, the female lead played by Mumtaz is warned by her beloved Rajesh Khanna to not feel arrogant over her fair complexion as it will fade away with time. The lyrics depict fair skin tone as a prized endowment.

The fairness fixation continued in several hit songs of the films released in the successive decades such as "Gori Hain Kalaiyan" from the movie 'AajKa Arjun' released in 1990, "YehKaaliKaaliAankhein, Yeh Gore GoreGaal"from the movie 'Baazigar' released in 1993, "Gore GoreMukhdePe Kala KalaChashma" from the movie 'Suhaag' released in 1994, "ChuraKeDilMera,GoriyaChali" from the movie 'Main AnariTuKhiladi' released in 1994, "Gori GoriGoriGori" from the movie 'Main Hun Na' released in 2004and "ChittiyanKalaiyanVe" from the movie 'Roy' released in 2015.The content analysis revealed projection of fair skin tone as the benchmark for beauty and power in these selected popular Hindi film songs.

Two of the selected songs which particularly stand out for their racist lyrical content aretitled "White White Face Dekhe" from the movie 'Tashan' released in 2008 and "Tenu Kala ChashmaJachda Hai" from the movie 'BaarBaarBaarDekho' released in 2016.The opening lines of the first songsay, "After seeing your fair complexion, my heart is beating so fast that it is likely to kill me. My heart is dancing with joy on seeing your fair face."On the other hand, the male lead in the second song tells his beloved that black sunglasses suither face because she is very fair.

The results support the observations by Bettache (2020) who points out that conceptions of beauty in Asia have been closely linked to skin tone and social expectations concerning physical appearance are typically higher for women.

Body shaming based on skin tone

The study found strong evidence of body shaming based on skin tone in some of the selected songs. The worst case of body shaming is seen in the theme, visuals, character portrayal and racist lyrics of the song titled "Hum Kaale Hain Toh Kya HuaDilwale Hain" from the movie 'Gumnam'released in 1965. The song features yesteryear comedian Mehmoodwho is shown in the South Indian attire, playing a caricature character with extremely dark skin tone,desperately trying to woo a beautiful girl played by Helen. The opening lines of the song are filled with racist remarksas Mehmood's character says, "Where are you running away? Are you scared of the black man? I have a heart, even though I am black."The same lines are repeated several times throughout the song with an unapologetic humorous vigour.

The lyrics of the song titled "Gore Rang Pe Na ItnaGumanKar"from the movie 'Roti'released in 1974 associate fair skin with sense of pride and superiority. The colourismin the Hindi film songs continued in the next four decades as evident from the song titled "Beyoncé Sharma Jayegi" released in 2020 from the upcoming movie 'KhaaliPeeli'featuring Ishaan Khattar and AnanyaPandewhere the former is shown singing, "After watching you, oh fair lady, Beyoncéwill feel embarrassed." The song received huge backlash from the public for its racist element forcing the makers to change the lyrics to "Tera NakhraDekhKar,Duniya Sharma Jayegi".

Another noticeable elementin some of the selected songs was the dichotomy of casting the popular actresses endowed with beautiful dusky complexionin real life who are portrayed as happily vying for the attention of their beloved men and enjoying being praised and wooed by the latterwith the lyrics that unabashedly glorify the fair skin complexion.Some of these examples areJaya Prada in the song titled "Gori Hain Kalaiyan", Kajolin the song titled "YehKaaliKaaliAankhein, Yeh Gore GoreGaal" andShilpa Shetty in the song titled "ChuraKeDilMeraGoriyaChali".

Talking about the fixation with the fair skin tone, Harrison & Thomas (2009), Jha& Adelman (2009), and Utley &Darity (2016) say that women are judged more harshly for their darker skin tone than men.

Using fair skin as weapon to attract and manipulate

Some of the selected songs also showcased racist theme and lyrics where fair complexionis used as a means to attract the attention of men. The study also establish the presence of stereotyping of women as 'objects of beauty'who do not refrain from using their good looks and fair skin to manipulate the opposite sex and demand things. For instance, in the song titled "Gori Hain Kalaiyan" from the movie 'AajKa Arjun' released in 1990, Jaya Prada's character is shown running after her beloved played by Amitabh Bachchan, begging him to buy green bangles for her 'fair wrists' and accept her in love.Decades later, Jacqueline Fernandes is shown as crooning "ChittiyanKalainyan Ve"in the movie 'Roy'released in 2015, in which she repeatedly refers to her fair complexion and urges her lover to take her to movies and shopping,and buyitems.

In the movie 'Main Hun Na', Amrita Rao's character is shown as a tomboy who harbours one-sided love for her friend played by Zayed Khan. To attract the attention of her beloved who usually ignores her in favour of blonde beauties, she undergoes heavy makeover and emerges as a beautiful girl in a traditional outfit. This sequence is followed by the song titled "Gori GoriGoriGori" which shows that her lover is floored by her looks and tries to win her back.

The results found support in a study by Bisht(2018) which concluded that Punjabi pop music promotes stereotyped image of women as 'objects of beauty', who are pursued and chosen by men on the basis of their skin complexion and other physical features. The songs also highlight women's dependence on men for fulfillment of their wishes in lieu of their beauty.Bettache (2020) reveals that in Asia, conceptions of beauty have been closely linked to skin tone, and social expectations with respect to physical appearance are typically higher for women.

Conclusion

The present study threw light on the deep-rooted problem of colourismprevalent in the Indian society while also establishing the presence of skin tone bias in the Hindi film songs right from the black and white era to the present times. Cinema is both a reflection of the existing social values and norms and a catalyst for changing the attitude, behaviour and opinions of millions of people. The findings of the study revealed that the makers of the Hindi film music have faileddeplorably on addressing the societal skin colourbias. By glorifying the fair complexion as the benchmark of beauty, success and power, the songs have contributed towards reinforcing the social stigma and discrimination attached with the dusky complexion despite that fact that in a tropical country like India majority of the people are dark skinned due to the hot and humid weather and genetics.Instead of normalizing and instilling a sense of pride with one's skin tone, whether dark or fair, the popular Bollywood songs over the past eight decades have unapologetically and frivolously used words with racial connotation like *gori, gore, goriya,kali, kala* etc. in its lyrics and promoted body shaming of the worst kind through caricature depiction of darker characters and racist visuals.

By flashing and promoting the fair skinned imagesof the leading charactersand projecting them as the most desirable women and men, the popular media culture (Hindi film songs, advertisements etc.) influences the general public to buy and use fairness products.Interestingly, East Asia is the world's largest market for skin whitening products (Glenn, 2008). Bettache(2020) hints at the close links between the conceptions of beauty and skin tone, and the social expectations attached with physical appearance of women. According to Adbiet al. (2021), arecent study of Indian women links sense of disempowerment with the increased demand for skin-lightening products. Harrison & Thomas (2009), Jha& Adelman (2009), Utley &Darity(2016)also point out at harsher judgement meted out to women than men based on skin tone.

There is an urgent need for the government to issue advisories to the makers of the Hindi songs against 'colourism'. The study also calls for legal provisions

to bring an end to the shameful glorification of fair complexion as the benchmark for beauty, success and a tool of manipulation.However, more focus should be laid on self-regulatory practices to control the racist portrayal in the Hindi film songs without interfering with the freedom of expression and creativity. Also, there is a need to spread body positivity among the audiences through the popular media,while highlighting the core message to "feel proud and comfortable with one's skin tone."

References :

Adbi, A., Chirantan, C., Clarissa, C., Zoe, K., & Jasjit, S. (2021).Women's Disempowerment and Preferences for Skin Lightening Products that Reinforce Colorism: Experimental Evidence fromIndia. INSEAD Working Paper No. 2021/02/OBH/STR, IIM Bangalore Research Paper No. 527, Retrieved from https://ssrn.com/abstract=2862997.

Ayyar, V., &Khandare, L. (2013).Mapping color and caste discrimination in Indian Society. In R. E. Hall (Ed.), *The melanin millennium.*(pp. 71–95). Dordrecht: Springer.

Bakhshi, S., & Baker, A. (2011). "I think a fair girl would have better marriage prospects than a dark one": British Indian adults'perceptions of physical appearance ideals. *Europe's Journal ofPsychology*, 7(3), 458-486.https://doi.org/10.5964/ejop.v7i3.144.

Banaji, S. (2006).*Reading 'Bollywood': The Young Audience and Hindi Films*. New York:Macmillan.

Baumann, S. (2008). The moral underpinnings of beauty: A meaning based explanation for light and dark complexions in advertising. *Poetics*, 36(1), 2-23.https://doi.org/10.1016/j.poetic.2007.11.002.

Bettache, K. (2020). A call to action: The need for a cultural psychological approach to discrimination on the basis of skin color in Asia. *Perspectives on Psychological Science*, 15(4), 1131-1139.https://doi.org/10.1177/1745691620904740.

Bisht, P. (2018). Stereotyped Portrayal of Women in Punjabi Rap Songs.*Communication Today*, 2(2), 73-80.

Burton, L.M., Bonilla-Silva, E., Ray, V., Buckelew, R., & Freeman, E.H. (2010).Critical race theories, colorism, and the decade's research on families of color.*Journal of Marriage and Family*,72(3), 440–459.https://doi.org/10.1111/j.1741-3737.2010.00712.x

Chen, J.M.,& Francis-Tan, A. (2021).Setting the Tone: An Investigation of Skin Color Bias in Asia.*Race SocProbl*.https://doi.org/10.1007/s12552-021-09329-0.

Cullity, J. (2002). The global desi: Cultural nationalism on MTV India. *Journal of Communication Inquiry*, 26(4), 408-425.https://doi.org/10.1177/019685902236899.

Dixon, A.R., & Telles, E.E. (2017). Skin color and colorism: Global research, concepts, and measurement. *Annual Review of Sociology*,43, 405–424.

Espino, R., & Franz, M.M. (2002). Latino phenotypic discrimination revisited: The impact of skin color on occupational status. *SocialScience Quarterly*, 83(2), 612–623.

Glenn, E.N. (2008). Yearning for lightness: Transnational circuits in the marketing and consumption of skin lighteners. *Gender &Society*, 22, 281-302.

Goldsmith, A.H., Hamilton, D., & Darity Jr, W. (2007).From dark to light—Skin color and wages among African-Americans.*Journal of Human Resources*, 42(4), 701–738.

Hamilton, D., Goldsmith, A.H., &Darity Jr, W. (2009).Shedding "light" on marriage: The influence of skin shade on marriage for black females.*Journal of Economic Behavior & Organization*,72(1), 30–50.

Harrison, M.S., & Thomas, K.M. (2009). The hidden prejudice in selection: A research investigation on skin color bias. *Journalof Applied Social Psychology*, 39(1), 134-168.https;//doi.org/10.1111/j.1559-1816.2008.00433.x.

Hill, M.E. (2002). Skin color and the perception of attractiveness among African Americans: Does gender make a difference? *Social Psychology Quarterly*, 65(1), 77–91.

Hunter, M. (2007).The persistent problem of colorism: skin tone, status, and inequality.*Sociology Compass*, 1(1), 237–54.

Jha, S., & Adelman, M. (2009).Looking for love in all the White places: A study of skin color preferences on Indian matrimonial and mateseekingwebsites.*Studies in South Asian Film and Media*,1(1), 65-83.https://doi.org/10.1386/safm.1.1.65_1.

Kaur, R. (2002), Viewing the West through Bollywood: A Celluloid Occident in Making.*Contemporary South Asia*, 11(2), 199-209.

Mishra, N. (2015).India and colorism: The finer nuances.*Washington University Global Studies Law Review*, 14 (4), 725–50.

Mittal, J.P. (2006).*History of Ancient India: From 4250 BC to 637 AD447*.Atlantic Publishers.

Monk, E.P., Jr. (2015). The cost of color: Skin color, discrimination, and health among African-Americans. *American Journal of Sociology*,121(2), 396–444.

Painter, M.A., Holmes, M.D., & Bateman, J. (2016).Skin tone, race/ethnicity, and wealth inequality among new immigrants.*SocialForces*, 94(3), 1153–1185.

Perreira, K.M., & Telles, E.E. (2014). The color of health: Skin color, ethnoracial classification, and discrimination in the health of Latin Americans. *Social Science & Medicine*, 116, 241–250.

Rajesh, M."India's Unfair Obsession with Lighter Skin."The Guardian. 14th August, 2013. Retrieved from https://www.theguardian.com/world/shortcuts/2013/aug/14/indias-dark-obsession-fair-skin.

Rondilla, J.L., &Spickard, P. (2007).*Is lighter better? Skin-tone discrimination among Asian Americans*. Maryland: Rowman& Littlefield.

Rosenblum, A., Darity Jr, W., Harris, A.L., & Hamilton, T.G. (2016). Looking through the Shades: The Effect of Skin Color on Earnings by Region of Birth and Race for Immigrants to the United States.*Sociology of Race and Ethnicity*, 2(1), 87–105.https://doi.org/10.1177/2332649215600718.

Sayantan, M.(2020).Darker shades of "fairness" in India: Male attractiveness and colorism in commercials.*Open Linguistics*, 6(1), 225-248. https://doi.org/10.1515/opli-2020-0007.

Sharma, R.S. (2016).*Sudras in Ancient India: A Social History of the Lower Order Down to CircaA.D. 600*.(3rd Edition).MotilalBanarsidass Publishing House.

Telles, E.E. (2004). *Race in another America: The significance of skin color in Brazil*. Princeton University Press.

Thappa, D.M.,&Malathi, M.(2014). Skin color matters in India. *Pigment International*, 1(1), 2–4.Retrieved fromhttps://www.pigmentinternational.com/text.asp?2014/1/1/2/135419.

Utley, T. J., Jr., &Darity, W, Jr. (2016). India's color complex: One day's worth of matrimonials. *The Review of Black PoliticalEconomy*, 43(2), 129-138.

Vasan, A. (2010). Films and TV: Viewing patterns and influence on behaviours of collegestudents.WorkingPaper, No. 13,Population Council, New Delhi.Retrieved from https:// pdfs.semanticscholar.Org/f8e8/9b90e2b 9 10258bd25ec fb6fe46cf4e9740f2.pdf.

Venkataswamy, S. (2013).Transcending gender: advertising fairness cream for Indian men.*Media Asia*, 40(2): 128–38. https://doi.org/10.1080/01296612.2013.11689961.

Villarreal, A. (2010). Stratification by skin color in contemporary Mexico.*American Sociological Review*,75(5), 652-678.https://doi.org/10.1177/0003122410378232.

❑❑❑

Assistant Professor, Dept. of Journalism and Mass Communication, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

कुमाऊँ का विशिष्ट लोकनाट्य - रामलीला

REETA PANDEY[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

[1]Research Scholar, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

[2]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

शोध सार

"रामलीला" को लोकनाट्य के रुप में पूरे भारत वर्ष में विशेष ख्याति प्राप्त है। 'एकता में अनेकता' भारतीय संस्कृति की इस विशिष्टता के कारण यह लोकनाट्य भारत के अनेक राज्यों में अलग-अलग शैली में विद्यमान है। लोक साहित्य को मुख्यतः सात भागों में विभाजित किया जा सकता है- 1. लोकगीत, 2. लोकगाथायें, 3. लोककथायें, 4. कहावतें, 5. मुहावरे, 6. पहेलियाँ, 7. लोकनाट्य। उत्तराखण्ड राज्य में लोकनाट्य को गीत-नाट्य प्रधान माना जाता है। इस राज्य के कुमाऊँ मण्डल में पुरुषोत्तम राम की कथा का मंचन हिंदी के साथ-साथ अपनी क्षेत्रीय बोलियों में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में लोक तथा शास्त्र का अदभुत संगम देखने को मिलता है। इसकी मुख्य विशेषता वाद्य यंत्रों के साथ रामचरितमानस का पाठ, चैपाइयों का गायन तथा अभिनय है। रामलीला के मंचन में सारे जगत व कालखण्डों का सत्य निहित है, इससे प्रत्येक जनमानस को जीवन की वास्तविकता का ज्ञान होता है। कुमाऊँ में रामलीला का मंचन अनेक रागों व तालों में किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषता श्रुति परम्परा के अनुसार इसका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानान्तरण होना है। कुमाऊँनी रामलीला में सांगीतिक पक्ष अधिक उजागर है, किन्तु नाट्य के अभाव में इस कला का मंचन करना तालविहीन गीत जैसा प्रतीत होता है। रामलीला में प्रभु राम से जुड़े सभी वृत्तान्तों का नाट्य रुप में प्रदर्शन किया जाता है। प्रस्तुत शोध में लोकनाट्य रामलीला का एतिहासिक विवरण व कुमाऊँ के अल्मोड़ा व नैनीताल जिले की रामलीला का उल्लेख किया गया है। इस शोध कार्य में रामलीला में गायी जाने वाली चैपाई के सांगीतिक पक्ष (स्वरलिपि व ताल) पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य - कुमाऊँनी लोकनाट्य 'रामलीला' के सांगीतिक पक्ष का अध्ययन करना।

मुख्य शब्द - लोकनाट्य, नाट्यशास्त्र, कुमाऊँ, रामलीला, चौपाई, स्वरलिपि।

कुमाऊँ में रामलीला मंचन का इतिहास

कुमाऊँ की रामलीला का वर्णन करने से पूर्व यहाँ पर नाट्य का उल्लेख करना इस लेख को समझने हेतु उपयुक्त होगा। भरतकृत "नाट्यशास्त्र" नाट्य के विषय पर लिखा गया महत्वपूर्ण ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र में यह उल्लेख है कि 'ऋग्वेद' से 'पाठय', 'सामवेद' से 'गीत', 'यजुर्वेद' से 'अभिनय' और 'अथर्ववेद' से 'रस' लेकर 'नाट्य' की रचना हुई है। पाठय, गीत, अभिनय और रस यही चार तत्व नाट्य में माने जाते हैं। इसमें अभिनय तत्व नाट्य में विशेष स्थान रखता है। अभिनय के चार प्रकार कहे गये हैं- 1. आंगिक, 2. वाचिक, 3. सात्विक और 4. आहार्य। नाट्य के संदर्भ में भरत मुनि ने अपने "नाट्यशास्त्र" में कहा है कि कोई एसा ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग या कर्म नहीं है जो नाटकों में न दिखाई दे

"न तदज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

न स योगो न स तत्कर्म नाट्येस्मिन यन्न दृश्यते"।। (1,113)[2]

(संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131)

नाटक का लक्ष्य ही लोकवृत्त का अनुकरण है। त्रैलोक्य के भावों का अनुकीर्तन ही नाटक का विशिष्ट उददेश्य है-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्यं नाट्यं भावानुकीर्तनम‘‘।[3]

(संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131)

कुमाऊँ में रामलीला का जो चलन है, वह पूरी तरह लोक पक्ष पर आधारित है। यहाँ पर कुमाऊँनी रामलीला का अपना मिजाज है। सन 1957 में उत्तराखण्ड सांस्कृतिक विकास अधिकारी के पद पर रहते हुए रंगकर्मी स्व. ब्रजेन्द्र लाल शाह ने लोक धुनों के आधार पर रामलीला गीत नाटिका की रचना की थी। इन्होंने लोक गीतों की दर्जनों धुनों को टेप रिका ॅर्डर पर संरक्षित किया। इन्हीं धुनों का वर्गीकरण कर इन्होंने कुमाऊँनी रामलीला तैयार की। जिसे रामलीला कमेटी दरकोट, मुनस्यारी में सन् 1982 में ‘‘श्री रामलीला कुमाऊँनी गीत नाटक‘‘ नाम से प्रकाशित किया। यह कार्य कुमाऊँनी संस्कृति व साहित्य को विरासत के रूप में सहेजने हेतु बहुत महत्वपूर्ण है।[4]

कुमाऊँ में प्रचलित रामलीला का सांगीतिक रूप से विशेष महत्व है। पर्वतीय अंचल की रामलीला में ‘रामचरितमानस‘ की प्रत्यक्ष छाप है। कुमाऊँ के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री नित्यानंद मिश्र के अनुसार - ‘‘कुमाऊँ की पहली रामलीला का श्रीगणेश अल्मोडा शहर के बद्रेश्वर में स्व. देवीदत्त जोशी जी की प्रेरणा से सन् 1860 में हुआ‘‘।[5] डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय के अनुसार - ‘‘कुमाऊँनी रामलीला का आरम्भ सन 1860 के आस पास से माना जाता है। सन 1900 से पहले रामलीला केवल कुमाऊँ के अल्मोडा जिले के बद्रेश्वर में होती थी। इसके बाद इसी शहर के अन्य क्षेत्रों जाखन देवी, नंदा देवी, धारानौला, हुक्का क्लब तथा मुरलीमनोहर आदि स्थानों पर यह रामलीला होने लगी‘‘।[6]

नैनीताल निवासी श्री विश्वम्भर नाथ सखा जी ने कुमाऊँ की रामलीला के बारे में लिखा है - ‘‘चंद्रवंश के राजाओं के उदभव के बाद भी कला ने नया रूप लिया। सुविधानुसार जन संस्कृति ने नवीन परन्तु उन्नत प्रतीकों को अंगीकार किया। कुमाऊँनी संस्कृति में ये नाट्य प्रतीक आज भी कुमाऊँ को विशिष्ट स्थान प्रदान करने में सार्थक हुए हैं। इसलिए इसमें नवीनता, सौंदर्य कला (ध्वनि और लय) एक साथ दृष्टिगोचर होते हैं‘‘।[7]

नैनीताल क्षेत्र में रामलीला का मंचन

जिस प्रकार प्रत्येक स्थान की बोली में परिवर्तन दिखाई देता है, उसी प्रकार हमारी लोक संस्कृति में भी सूक्ष्म परिवर्तन दिखाई देता है। ऐसा ही परिवर्तन यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली रामलीला में दृष्टिगोचर होता है। अर्थात बोली, भाषा, वेशभूषा, गायन शैली तथा रामलीला के मंचन में परिवर्तन होता है। परंतु इन सबका आधार एक ही है।

नैनीताल - सन् 1880 में श्री मोती लाल साह के प्रयास से नैनीताल में रामलीला का प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में रामलीला का अयोजन तथा प्रबंधन में इनके पुत्र लाला दुर्गा साह, अमर नाथ साह तथा कृष्ण साह की भूमिका मुख्य थी। बाद में मल्लीताल तथा तल्लीताल में अलग-अलग रामलीला होने लगी। प्रसिद्ध रंगकर्मी स्व0 तारादत्त सती के निर्देशन में सन् 1974 में सम्पूर्ण रामायण की प्रस्तुति ‘‘गीत नाटक प्रभाग‘‘ के कलाकारों ने की।[8]

नैनीताल के श्री कृष्ण साह के अनुसार - रामलीला प्रस्तुति के दौरान कलाकार पूरे हाव-भाव के साथ छंद तथा चैपाईयों को कई रागों में गाकर इसका अभिनय करते हैं। छंद तथा चैपाईयाँ मुख्यतः पीलू, दरबारी कान्हडा, हमीर, बागेश्री, वृन्दावनी सारंग, भैरवी, मालकौंस, कामोद, शिवरंजनी, दुर्गा, बहार, मल्हार, आदि रागों में गायी जाती है।[9]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

रामलीला का सांगीतिक पक्ष

रामलीला को मुख्य रूप से गीतनाट्य प्रधान माना जाता है। कुमाऊँ की रामलीला में सभी सम्वाद गेय रूप में हैं। इसकी चैपाइयों तथा छन्दों को विभिन्न रागों व तालों में पेश किया गया है। रागों में गाये जाने के कारण यहाँ की रामलीला सम्पूर्ण विश्व में अनूठा स्थान रखती है और साथ ही इस लोकनाट्य के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को सहजता से सीखा जा सकता है। यहाँ पर रामलीला मंचन के दौरान राम कैकई के सम्वाद से जुड़ी एक चैपाई की स्वरलिपि तथा ताल चिन्हों का विवरण दिया जा रहा है।

चैपाई (राग-बागेश्री)

राम-कैकई (सम्वाद) - “सुन जननी सोई सुत बड़भागी, जो पितु मातु वचन अनुरागी।

तनय मातु पितु तोश निहारा, दुर्लभ जननी सकल संसारा“।।[10]

अर्थ - हे माता सुनो वही पुत्र बड़भागी है जो पिता माता का अनुरागी पालन करने वाला है। आज्ञा पालन के द्वारा माता-पिता को सन्तुष्ट करने वाला पुत्र, हे जननी सारे संसार में दुर्लभ है।[11]

स्वरलिपि (स्थाई)

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां	-	-	(सां)	सां	-	नि	-
								सु	ऽ	न	ऽ	ऽ	ज	न	ऽ
ध	प	म	-	म	ध	नि	ध	सां	-	-	(सां)	सां	-	नि	-
नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री	ऽ	सु	ऽ	न	ऽ	ऽ	ज	न	ऽ
ध	प	म	-	म	-	प	म	ग	-	रे	सा	-	रे	सा	-
नी	ऽ	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ई	ऽ	सु	ऽ	त	ऽ	ऽ	ब	ड़	ऽ
रे	सा	ऩि	-	सा	-	-	-	सा	ग	रे	सा	ऩि	ऩि	ध़	ऩि
भा	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	पि	ऽ	तु	ऽ
सा	-	-	-	सा	-	म	-	म	ध	धनिध	म	म	ध	(नि)	ध
मा	ऽ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	व	ऽ	च	ऽ	न	ऽ	ऽ	अ	नु	ऽ
म	-	-	-	ग	रे	सा	-								
रा	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ								

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

अंतरा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ग	-	मग	ग	ग	-	म	-	ध	-	-	-	नि	-	ध	-
त	ऽ	नऽ	ऽ	य	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	पि	ऽ	तु	ऽ
सां	-	-	-	सां	-	-	रें	नि	-	-	ध	सां	-	-	-
तो	ऽ	ऽ	ऽ	ष	ऽ	नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
								सां	-	-	-	सां	नि	ध	प
								दु	ऽ	र	ऽ	ऽ	ल	भ	ऽ
ग	-	म	-	ग	रे	सा	-	म	-	मग	पम	ग	-	रे	सा
ज	ऽ	न	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	कऽ	ऽऽ	ल	ऽ	सं	ऽ
ग्	2	0	3												
रे	ऽ	ऩि	ध़	सा	ऽ	ऽ	ऽ								
सा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ								

निष्कर्ष

'रामलीला' अखण्ड ज्योति के समान आदि से अनन्त तक प्रज्वलित हैं। इस ज्योति के प्रकाश से आम जनमानस को प्रेरणा मिलती है। इस शोध कार्य के दौरान मुझे यह ज्ञात हुआ कि कुमाऊँ के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में रामलीला नौटंकी, भाषा-संवाद तथा हाव-भाव के साथ होती है, जबकि कुमाऊँ की रामलीला में नाट्य तत्वों को शास्त्रीय गायन द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो स्वयं में अद्भुत है।

अल्मोड़ा में रामलीला का गायन कुमाऊँनी बोली में होता है, जो हमारी बोली भाषा के विकास में सहायक है। इसके माध्यम से नयी पीढ़ी का क्षेत्रीय बोली (कुमाऊँनी) के प्रति लगाव व उत्साह बढ़ेगा। इस गायन शैली में अनेक रागों व तालों का संकलन समाहित है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए यह अमूल्य खजाना है। इस हेतु सभी संगीत विद्यार्थीयों को रामलीला की चैपाइयों व छंदों से रागों को समझने का प्रयास करना चाहिए और इनका नित्य अभ्यास करना चाहिए।

संदर्भ

1 सम्पादक- शर्मा भुवन, उत्तराखण्ड के लोक नृत्य झोड़ा, चाँचरी, छपेली और छोलिया, पृष्ठ-110
2 संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131
3 संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131
4 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-19

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

5 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-10
6 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-11
7 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-10,11
8 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-17
9 श्री साह कृष्ण कुमार, साक्षात्कार के आधार पर, राम सेवक सभा, नैनीताल।
10 सम्पादक- पाण्डे शिव, पारम्परिक कुमाऊँनी रामलीला गीत-नाटिका, प्रस्तुति श्री लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) अल्मोड़ा, पृष्ठ-46
11 टीकाकार - पोहार हनुमान प्रसाद, श्रीमदोगोस्वामी तुलसीदासविरचित, श्री रामचरितमानस, पृष्ठ-378

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

संत कबीरदास का सामाजिक, सांगीतिक व आध्यात्मिक योगदान

BHASHKER DATT KAPRI[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

1 Research Scholar, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

2 Assistant Professor, Department of Music, D.S.B.Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

शोध सार

हमारा देश ’भारत’ हमेशा से ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए विश्वविख्यात रहा है। यहाँ अनेक महान् विभूतियों, संत, महापुरुषों, आदि पवित्र आत्माओं का अवतरण समाज के उद्धार हेतु होता आ रहा है। भक्तिकालीन आंदोलन के समय समाज कई सम्प्रदायों में बँट गया था। भगवान और आध्यात्म के नाम पर प्रत्येक वर्ग का अपना आडम्बर व राजनैतिक उथल-पुथल और सामाजिक रूढ़िवादी मान्यताओं का बोलबाला था। समाज में फैली इस असमानता को दूर करने हेतु एक समाज सुधारक व नवीन रचनात्मक व्यक्तित्व की आवश्यकता थी। ऐसे समय में हमारे देश में एक महान् विभूति ’संत कबीर’ का प्रादुर्भाव हुआ जो नवीन चेतना और नवीन दृष्टि से ओत-प्रोत थे। ’आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी’ संत कबीर को समाज सुधारक के रुप में ही देखते हैं। संत कबीर जी के चरित्र को समाज सुधारक व भक्तिकालीन कवि के रूप में देखा जा सकता है। आगे चलकर यही महान् ’संत कबीर’ मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक, हिन्दी साहित्य के नूतन स्तम्भ, भारतीय संत परंपरा के अन्वेषक एवं निर्गुण भक्ति धारा के अनुयायी व प्रचारक रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में ’संत कबीर जी’ के सामाजिक, साहित्यिक व सांगीतिक पहलुओं को दिखाने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य - संत कबीर की वाणी को लोक गीतों के माध्यम से उजागर करना।

शैक्षिक निहितार्थ - प्रत्येक काल खण्ड में कबीर द्वारा कही गयी बातें प्रासंगिक हैं जो मानव जीवन को मार्गदर्शित करने का कार्य करती हैं।

मुख्य शब्द - कबीर, सबद, साखी, बिरहुली, हिंडोला, गुरू, चांचर।

भूमिका

संत कबीर के जन्म के विषय में कोई भी जानकारी प्रमाणिक तौर पर उपलब्ध नहीं है। जनश्रुति के आधार पर संत कबीर का जन्म विक्रम संवत् 1455 में ’काशी’ में हुआ। ऐसा माना जाता है कि एक विधवा स्त्री को ’स्वामी रामानन्द’ जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया जिसके फलस्वरूप विधवा स्त्री को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह बालक कोई साधारण बालक नहीं थे बल्कि यह बालक थे-’संत कबीर’। जन्म के बाद संत कबीर की माँ लोक-लाज के भय से अपने हृदय के अंश को ’लहरा तारा’ नामक तालाब के किनारे छोड़ आई।[2] (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0-143) संयोगवश उसी समय ’नीमा’ और ’नीरू’ नामक निःसंतान जुलाहा दम्पति वहाँ से जा रहे थे, उन्होंने बालक का रुदन सुना और उसे खुदा का करम समझकर अपने साथ ले आये। उन्होंने इस नन्हे बालक का पालन-पोषण पुत्रवत किया, तत्पश्चात् काज़ी से नन्हे शिशु का नामकरण संस्कार अपने धर्म के अनुसार करवाया और बालक का नाम रखा-’कबीर’। अरबी भाषा का शब्द ’कबीर’ का हिंदी शब्दकोश के अनुसार तात्पर्य है - ’महान्’ या ’प्रतिष्ठित’।[3] (वृहत हिंदी शब्दकोष, प्रथम भाग, पृ0-522) संत कबीर के सम्पूर्ण जीवन वृतांत को देखते हुये कह सकते हैं कि संत कबीर ने अपने नाम ’कबीर’ को सही मायनों में सार्थक किया है। ’डॉ. शिवकुमार शर्मा जी’ के अनुसार - ’’कबीर के विषय में अंततः कहा जा सकता है कि संत कबीर का जन्म 1455 में तथा मृत्यु 1575 में ’मगहर’ में हुई।’’[4] (’हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ’, डॉ. शर्मा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

शिव कुमार, पृ0-135) हिन्दू-मुस्लिम एकता के परिचायक संत कबीर जन्मे तो ब्राह्मण-हिन्दू परिवार में लेकिन उनका लालन-पालन मुस्लिम परिवार में हुआ। संत कबीर की पत्नी का नाम लोई था। संत कबीर की दो संताने कमाल व कमाली थे। संत कबीर निरक्षर व अशिक्षित थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा का माध्यम संत-फकीरों की संगत था। अक्षर ज्ञान के विषय में 'संत कबीर' कहते हैं-

मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ।

चरिउ जुग को महातम, मुखही जनाई बात।।[5]

संत कबीर ने 'स्वामी रामानन्द जी' से शिष्यत्व प्राप्त किया। 'काशी में हम प्रगट भये हैं, रामानंद चेताये'।[6] (भारतीय संगीत का इतिहास', श्री जोशी उमेश, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, आगरा, उ0प्र0, पृ0-222) इस पंक्ति के माध्यम से संत कबीर अपने विषय में कहते हैं कि मैं काशी में ही पैदा हुआ तथा स्वामी जी के आशीर्वाद से मुझे उनके शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संत कबीर स्वयं नहीं लिखते थे। वे जो भी उपदेश या बानी कहते, शिष्य उसे गुरु मंत्र मानकर लिखते रहे। यही कारण है कि संत कबीर की रचनाओं का अद्भुत और विशाल संकलन आज भी साहित्यिक व सांगीतिक रुप से हमारे बीच विद्यमान है।

संत कबीर की रचनाऐं

संत कबीर का काव्य संग्रह 'बीजक' के नाम से विख्यात है। 'बीजक' शब्द का सार है-'गुप्त धन बताने वाली सूची'। 'डॉ. जयदेव सिंह' व 'डॉ. वासुदेव सिंह जी' के अनुसार -''अमृतसर के गुरुद्वारे में भगत कबीरपंथी 'बीजक' को ही पढ़ते हैं।[7] (कबीर वांगमय खण्ड 2 सबद, पृ0-10,11)

'बीजक' में संत कबीर के द्वारा दिये गये उपदेशों और सिद्धांतों का वर्णन प्राप्त होता है। 'बीजक' के तीन खण्ड हैं- 'रमैनी', 'सबद', 'साखी'। 'रमैनी' और 'सबद' में ऐसे पदों का उल्लेख है जो गाने योग्य हैं। सभी गीत ब्रज भाषा में लिखे गये हैं।

सबद - 'सबद' या 'शब्द' कबीर जी ने स्वयं के रचे पदों को कहा है और यह सबद संतों का अमृत तत्व है। संत कबीर ने विरह, प्रेम, उपदेश, चेतावनी आदि रूपों में सबद रचकर मनुष्य को सचेत किया है। 'सबद' का भाव नहीं समझने वालों के लिए संत कबीर लिखते हैं-

''माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।

साखी सबदी गावत भूले, आतम खबर न जाना।।''[8]

संत कबीर द्वारा रचित सबद (विरह और प्रेम)

गगन की ओट निशाना है।।टेक।।

दहिने सूर चंद्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है।। 1।।

तन की कमान सूरत का रोदा, शब्द बान ले जाना है।। 2।।

मारत बान बिंधा तनही तन, सतगुरू का परवाना है।। 3।।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

माखी बान घाव नहीं तन में, जिन लागा तिन जाना है।। 4।।

कहै कबीर सुनो भई साधो, जिन जाना तिन माना है।। 5।।[9]

(कबीर साहेब की शब्दावली, भाग-1, वर्ष-1922, इलाहाबाद, पृ0-13)

साखी - 'साखी', संस्कृत शब्द 'साक्षी' का अभिप्राय है। सर्वप्रथम 'गुरु गोरखनाथ' तथा 'गुरु नामदेव जी' द्वारा 'साखी गायन' की शुरुआत की गयी। संत कबीर के 'बीजक' में 353 साखियाँ मिलती हैं।[10] साखी एक, दो व तीन पंक्तियों में निबद्ध होती है। अधिकतर साखियाँ दो पंक्तियों में ही होती हैं। इनमें चार चरण होते हैं। साखी में दिये गये उपदेश 'दोहों' में निबद्ध हैं। संत कबीर के दोहों का अंग्रेजी अनुवाद 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी' ने Hundred Poems Of Kabeer' नामक शीर्षक के अंतर्गत किया है।[11]

गुरुदेव की इस रचना से पूरे पश्चिम बंगाल में संत कबीर की अनुपम छवि दृष्टिगोचर होती है। इसमें धार्मिक शिक्षा और सामाजिक सिद्धांतों के बारे में बताया गया है। संत कबीर द्वारा रचित साखी इस प्रकार है-

साखी

'तुम जिन जानों गीत है, यह जिनज ब्रहम विचार।

केवल कहि समझाया, आतम साधन सार।।

'साखी' आखी ज्ञान की, सतुझि देखि मन माहीं।

बिन साखी संसार का, झगड़ा छूटत नाहीं।।'[12]

(कबीर साहेब की शब्दावली भाग-1, वर्ष-1922, इलाहाबाद, पृ0-13)

'बीजक' के बाद 'गुरु ग्रंथ साहिब' ही ऐसा ग्रंथ है जिसमें संत कबीर की सर्वाधिक रचनायें मिलती हैं। 'आदि ग्रन्थ' में वर्णित रागों के साथ-साथ संत कबीर की साखियों को 243 श्लोकों में भी देखा जा सकता है।[13]

संत कबीर की वाणी तथा पदों को 'गुरु नानक देव जी' (सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु) स्वयं उनकी जन्म स्थली 'काशी' से लेकर आये थे। आगे चलकर संत कबीर की रचनाओं को 'गुरु अर्जुन देव जी' ने अपने धार्मिक ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में स्थान दिया। इस धार्मिक ग्रंथ में संत कबीर की वाणी का गायन 'रागियों' व 'रबानियों' द्वारा किया जाता है।

निर्गुण भक्ति धारा के श्रेष्ठ कवियों में 'संत कबीर' ऐसे संत हुए जिन्होंने लोकमानस पर जमी हुई धूल को अपनी रचनाओं के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। संत कबीर की भक्ति और काव्य में 'लोक' की छाप दिखाई देती है। लोक संवेदनाओं के प्रति संत कबीर हमेशा से ही सचेत रहे हैं। राग-रागिनीयों की जटिल निबद्धता संत कबीर के पदों में नहीं मिलती।14 (भक्ति काव्य से साक्षात्कार', पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86) संत कबीर की रचनायें लोकगायकों के माध्यम से लोकप्रिय हुई। संत कबीर की रचनायें शब्द और भाव प्रधान हैं। संगीत का प्रमुख आधार भाव ही है जो संत कबीर की रचनाओं में विद्यमान है। इन्हीं भावों को आधार मानकर संगीतज्ञों ने गायकी के माध्यम से संत कबीर के संदेश को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया है। संत कबीर ने अपनी रचनाओं में सांगीतिक पक्ष को भी शामिल किया। परिणामस्वरूप फिल्म जगत, शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत गायकों ने इनकी रचनाओं को अपने-अपने अनुसार स्वरबद्ध

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

किया। अतः संत कबीर की एक ही रचना को अनेक धुनों में सुना जा सकता है। संत कबीर की रचनाओं को इन रागों में भी निबद्ध किया गया है- राग मंगल, राग गारी, राग झूलना, राग कहरा, राग जँतसार, राग बसंत, राग होली, राग दादरा आदि।[15] (कबीर साहेब की शब्दावली भाग-4, वर्ष-1924, इलाहाबाद, पृ0-1,11,13,14,16)

संत कबीर और पं0 कुमार गंधर्व

संत कबीर की रचनाओं को संगीत जगत के महान गायक ’प0 विभूषण पं0 कुमार गंधर्व जी’ एवं अनेक गायकों ने कई रागों में गाया है। पं0 कुमार गंधर्व जी का शास्त्रीय गायन में ही नहीं अपितु ’लोक संगीत’ में भी अविस्मरणीय योगदान रहा है। शारीरिक व्याधि के चलते चिकित्सकों ने कुमार जी को गायन के लिए मना कर दिया और उन्हें देवास में निवास करना पड़ा।[16] देवास में रहते हुए कुमार जी ने मालवा की लोक धुनों को कई रूपों में सुना और इन लोक धुनों की ओर कुमार जी आकर्षित हुए। लोक गायन के अंतर्गत समाज के सभी पहलू स्वतः ही आ जाते हैं। अतः कुमार जी ने भी ’गीत वर्षा’, ’गीत हेमंत’ तथा ’गीत बसंत’ आदि शीर्षकों के अंतर्गत वर्षा तथा ऋतु से सम्बंधित कई प्रकार की धुनों को रागों में निबद्ध करके गाया।[17] इनके अतिरिक्त लोक में प्रचलित ’भजन गायन’ विधा को भी कुमार जी ने अपने गायन में विशिष्ट स्थान दिया है। देवास में रहते हुये कुमार जी ने कबीरपंथियों द्वारा संत कबीर के पदों को सुना। यहीं से कुमार जी संत कबीर के व्यक्तित्व को समझने और आत्मसात करने लगे और कुमार जी ने एक नवीन आयाम हासिल किया। कुमार जी ने संत कबीर की रचनाओं को पूरी निर्भीकता और फक्कड़पन के साथ गाया है जो संत कबीर के व्यक्तित्व को पूरी स्वतंत्रता के साथ दर्शाता है।[18]

आम तौर पर संत कबीर की रचनाओं का गायन कई कलाकारों ने किया है। यहाँ पर यह कहना उचित होगा कि संत कबीर के पदों का गायन जिस निष्ठा से कुमार जी ने किया है वह स्वयं में आश्चर्यजनक है। कुमार जी के विषय में एक तथ्य यह भी सामने आता है कि शुरूआत में जब कुमार जी संत कबीर के पदों को भजन के रूप में गाते, तो कई प्रसिद्ध आलोचक इनकी आलोचना करते हुये कहते थे कि - ’कुमार जी एक भिखारी का गीत क्यों गा रहे हैं?’ इन सबके बावजूद भी कुमार जी ने संत कबीर को अनवरत गाया। कुमार जी की इसी असीम लगन और निष्ठा के परिणामस्वरूप आज भी संत कबीर कुमार जी की अद्भुत गायकी के रुप में हमारे बीच हैं और हमेशा रहेंगे। कुमार जी द्वारा गाये गये कबीर के भजनों में से कुछ भजनों की सूची निम्नलिखित है - सुनता है गुरु ज्ञानी...... उड़ जाएगा हंस अकेला...... झीनी-झीनी चदरिया...... हिरना समझ बूझ...... नैया मोरी नीके नीके...... अवधूत युगान युगान...... आदि।

संत कबीर की अन्य कृतियाँ

चांचर, वेलि, हिंडोला, करहुली, बसंत, विप्रमतीसी, कहरा, बिरहुली गायन, होली आदि रचनाओं में संत कबीर के लोकानुभव का भान होता है।[19] इन रचनाओं का सूक्ष्म विवरण इस प्रकार है -

चांचर - कबीर ने ’चांचर’ के बारे में बताया है कि यह समूह में गाया जाने वाला गान है जिसे बसंतोत्सव में गाया जाता है। ’चांचर’ को ’चर्चर’, ’चर्चरिका’ आदि नामों से भी जाना जाता है। कबीर ने इस गान को भ्रमण करते हुये लोक परम्परा से खोजा होगा। ’चांचर’ के विषय में कबीर ने लिखा है-

’’कालबूत की हस्तिनी मन बौरा हो’’

’’कम्म अंध गज बसे मन बौरा हो।’’[20]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

('भक्ति काव्य से साक्षात्कार', पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86)

वेलि - यह उपदेशात्मक काव्य है जिसमें मोह-माया में उलझे प्राणियों को उपदेश दिया गया है। इस रचना के आखिर में 'हो रमैया राम' की टेक दोहरायी जाती है।

संत कबीर की 'वेलि'

हंसा सरवर सरीर में, हो रमैया राम, जगत चोर घर मूसे, हो रमैया राम।

जो जागल सो भागल, हो रमैया राम, सावेत गेल बिगोय, हो रमैया राम।।[21]

हिंडोला - सावन के झूले के प्रेम गीतों को 'हिंडोला' कहते हैं। ये गीत संत कबीर को बहुत प्रिय थे। अतः संत कबीर ने हिंडोला गीतों में आध्यात्मिक रचनाओं का पुट भी शामिल किया।

बसंत - 'बीजक' में संत कबीर द्वारा रचित 'बसंत' शीर्षक के अंतर्गत बारह रचनायें मिलती हैं। यह शैली 'फाग' से मेल रखती है। बसंत ऋतु में फाग गाये जाने के कारण इसे 'फाग काव्य' या 'बसंत काव्य' कहा जाने लगा। 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी' ने कहा है-''बीजक का बसंत इसी लोक प्रचलित काव्य रुप का अंगीकार है।''[22] ('भक्ति काव्य से साक्षात्कार', पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86)

विप्रमतीसी - 'विप्रमतीसी' अर्थात् विप्र(ब्राहमण)मती(बुद्धि)तीसी(तीस) अर्थात् तीस चैपाइयों में संत कबीर ने ब्राह्मणों की बुद्धि तथा आम जनमानस पर इसके प्रभाव के बारे में बताया है। वे ब्राह्मणों को सुनाते हैं कि पंडितों की बुद्धि पर कैसे पत्थर पड़ गये हैं जो वे लोगों को मूर्तिपूजा, शास्त्र तथा तीर्थ-यात्रा आदि के चक्करों में रमा रहे हैं और उनका पथ और उद्देश्य दोनों भ्रष्ट कर रहे हैं जबकि सबका मालिक एक ही है।[23] ('भक्ति काव्य से साक्षात्कार', पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-88) संत कबीर की वाणी इसे सिद्ध भी करती है।

''मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।

न मंदिर में न मस्जिद में, न काबे कैलाश में।।

खोजि होये तुरत मिल जाऊँ, इक पल की तलाश में।

कहत कबीर सुनो भई साधो, मैं तो हुँ विश्वास में।।''

कहरा - ग्रामीण अंचलों में 'कहार' लोग 'कहरा' गाते हैं और ढोल, मृदंग बजाकर इस गीत पर नृत्य करते हैं। कुछ लोगों ने 'कहरा गीत' को संगीत में प्रयोग होने वाली 'कहरवा ताल' के साथ भी जोड़ा है। 'कहरा' के बारे में संत कबीर लिखते हैं-

''ताल झाँझ मल बाजत आवै, कहरा सम कोई नाचे हो।''[24]

('भक्ति काव्य से साक्षात्कार', पालीवाल कृृष्णदत्त, पृ0-89)

'कहरा गीत' में संत कबीर ने राम-नाम के भजन को प्रमुख तथा अन्य ईश्वर स्तुतियों को व्यर्थ माना है। निम्नलिखित 'कहरा गीत' संत कबीर के लोक प्रचलित गीतों में से एक है-

'कहरा गीत'

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

राम नाम को सबहु बीरा, दूरि नाहिं दूरि आसा हो।

और देवका पूजहु बौरे, ई सम झूठी आसा हो।

उपर उ कहा भौ बौरे, भीतर अजदू कारो हो।

तनके बिरघ कहा भौ वौरे, मनुपा अजहू बारो हो।[25]

बिरहुली गायन - भारतीय लोक परम्परा की समृद्धता को समझने के लिए ’बिरहुली गायन’ को देखा जा सकता है। ’बिरहुली’ एक लोकगीत है जिसका गायन साँप द्वारा काटने पर उसके विष को बाहर निकालने हेतु किया जाता है। यह गरुड़ मंत्र का प्राकृत नाम है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि साँप तो आज भी अस्तित्व में हैं लेकिन ’बिरहुली’ तथा उसके गायक अब नहीं रहे। संत कबीर ने मनरूपी साँप के डंक मारे जाने पर मनुष्य के भीतर जो द्वेष रूपी विष बनता है उसे बाहर निकालने हेतु ’बिरहुली’ गायी है-

’बिरहुली’

आदि अंत नहिं होत ’बिरहुली’। नहिं जरि पलौ पेड़ बिरहुली।

निसु बासर नहिं होत बिरहुली। पावन पानी नहिं भूल बिरहुली।

ब्रहमादिक सनकादि बिरहुली। कथिगेल जोग आपार बिरहुली।

बिसहा मंत्र ने मानै बिरहुली। गरुण बोले आपार बिरहुली।[26]

होली - होली के विषय में जानने के लिए संत कबीर द्वारा विरचित होली का स्वरूप अग्रलिखित है-

होली

सतगुरु संग होरी खेलिये, जा तैं जरा मरन भ्रम जाय।।टेक।।

ध्यान जुगत की करी पिचकारी, छिमा चलावनहार।

आतम ब्रहम जो खेलन लागे, पाँच पच्चीस मँझधार।।

सतगुरु मिले फगवा निज पायो, मारग दियो लखाय।

कहैं कबीर जो यह गति पावे, सो जिव लोक सिधाय।।[27]

(’कबीर साहेब की शब्दावली’ पहिला भाग, वर्श-1922, इलाहाबाद, शब्द(1) पृ0-90)

The Kabir Project के अंतर्गत ’संत कबीर’

सुप्रसिद्ध वृत्तचित्रकार ’शबनम वीरमानी जी’ द्वारा **The Kabir Project** के अंतर्गत ’संत कबीर’ से सम्बधित चार वृत्तचित्र बनाए गये हैं जिनके नाम हैं - ’चलो हमारा देश’, ’हद अनहद’, ’कबीरा खड़ा बाज़ार में’, ’कोई सुनता है’।[28] इनका विवरण इस प्रकार है -

चलो हमारा देश - इस फिल्म में दो लोक गायकों प्रहलाद टिपान्या (भारतीय) व विद्वान लिंडा (अमेरीकी) की संत कबीर से सम्बंधित बातों को एक ही कड़ी से जोड़कर दर्शाया गया है। संत कबीर का देश कौन सा है? कहाँ है? आदि ऐसे प्रश्नों पर चर्चा की गयी है। यह फिल्म तीन भाषाओं हिंदी, मालवी और अंग्रेजी में उपलब्ध है।[29]

हद अनहद - इस फिल्म में गीत व कविता के द्वारा 'संत कबीर के राम' की चर्चा की गयी है। भारत व पाकिस्तान के बीच के शत्रुतापूर्ण व्यवहार के चलते इस फिल्म में संत कबीर के माध्यम से संदेश दिया गया है। यह फिल्म तीन भाषाओं अंग्रेजी, हिंदी, और उर्दू में उपलब्ध है।[30]

कबीरा खड़ा बाज़ार में - प्रस्तुत फिल्म में संत कबीर को पवित्र व धर्मनिरपेक्ष बतलाया गया है। एक दलित गायक प्रहलाद टिपान्या के जीवन वृतान्त पर बनी इस फिल्म में कबीर की कहानी सामने आती है। यह फिल्म तीन भाषाओं हिंदी, मालवी और अंग्रेजी में उपलब्ध है।[31] इस फिल्म को सन् 2011 में बावनवे राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में Special Jury Prize प्राप्त हुआ।

कोई सुनता है - यह फिल्म 'संत कबीर' की लोक संगीत परंपराओं व महान गायक 'पं0 कुमार गंधर्व जी' के जीवन की व्याख्या करते हुए संत कबीर की वाणी में बसी सूक्ष्म ध्वनियों को सुनने का आग्रह करती है। यह फिल्म तीन भाषाओं हिंदी, मालवी और अंग्रेजी में उपलब्ध है।[32]

उपर्युक्त फिल्मों के साथ ही 'शबनम वीरमानी जी' द्वारा The Kabir Project के अंतर्गत ही संत कबीर से सम्बधित कुछ पुस्तकों का भी प्रदर्शन किया गया है, जैसे - 'राजस्थान में कबीर', 'पाकिस्तान में कबीर', 'ठुमरी में कबीर', 'घट घट कबीर', 'मालवा में कबीर', तथा 'अजब शहर'।[33] इन सभी पुस्तकों में संत कबीर के पदों का संकलन है। इन पदों व वाणियों को कई गायक कलाकारों ने अपने मधुर स्वरों से सुसज्जित किया है। अतः सभी पुस्तकों में संग्रहित रचनाओं को सी0डी0 के माध्यम से भी सुना जा सकता है।

ठुमरी में कबीर - प्रस्तुत पुस्तक में संत कबीर के पदों का संकलन द्विभाषिक रुप में है। 'विदुषी विद्या राव जी' द्वारा संत कबीर के पदों का गायन 'ठुमरी गायन विधा' के रुप में किया गया है। 'ठुमरी में कबीर' पुस्तक की सी0डी0 भी उपलब्ध है जिसमें संत कबीर के छः पदों का संकलन है। 'ठुमरी' के अंतर्गत संत कबीर की वाणी का गायन वास्तव में सभी संगीत प्रेमियों व संगीत जगत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।[34]

निष्कर्ष

भारतवर्ष में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो संत कबीर के जीवन, व्यक्तित्व व उनके सिद्धांतों से प्रेरित न हुआ हो। आपकी वाणी में इतनी गहराई है कि इससे समाज के प्रत्येक वर्ग को जीवन का सार समझने की प्रेरणा मिली और मिलती रहेगी। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के व्यक्ति विशेष ने आपके शब्दों को गुरुमंत्र मानकर अपनी-अपनी भाषाओं व धुनों में अपनाया है। आपके द्वारा कही गयी बातों की प्रासांगिकता सभी कालखण्डों में विशिष्ट स्थान रखती है। आपकी रचनायें छंदों में निहित हैं जो हमारे हिन्दी साहित्य तथा संगीत जगत के लिए अविस्मरणीय हैं। आपकी रचनायें छंद, भावों और रसों से परिपूर्ण हैं जो संगीत के आधारभूत तत्व हैं। अतः संगीत कला के सभी रसिकों ने आपकी रचनाओं को पूर्ण निष्ठा व समर्पण के साथ अनेक रुपों में गाया है। आपका व्यक्तित्व हमेशा से ही प्रभावशाली रहा है। आपके व्यक्तित्व पर अनेक पुस्तकें व कई फिल्में बनाई जा चुकी हैं। साथ ही इस तकनीकी दौर में हमारे कई गुणीजनों व कलाकारों द्वारा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

आपकी रचनाओं को दृश्य-श्रव्य माध्यमों से भी देखा व सुना जा सकता है। अतः यह हम सभी के लिए अत्यंत ही लाभप्रद व पे्ररणादायक है।

संदर्भ

1 http://www.setumag.com/2017/09/Saket-Sahay-Article-Kabir.html
2 हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0-143
3 वृहत हिंदी शब्दकोष, प्रथम भाग, पृ0-522
4 ’हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ’, डॉ. शर्मा शिवकुमार, पृ0-135
5 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
6 ’भारतीय संगीत का इतिहास’, श्री जोशी उमेश, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, आगरा, उ0प्र0, पृ0-222
7 कबीर वांगमय खण्ड 2 सबद, पृ0-10,11
8 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
9 कबीर साहेब की शब्दावली, भाग-1, वर्श-1922, इलाहाबाद, पृ0-13
10 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.hm
11 http://www.setumag.com/2017/09/Saket-Sahay-Article-Kabir.html
12 कबीर साहेब की शब्दावली भाग-1, वर्ष-1922, इलाहाबाद, पृ0-13
13 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
14 भक्ति काव्य से साक्षात्कार’, पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86
15 कबीर साहेब की शब्दावली भाग-4, वर्ष-1924, इलाहाबाद, पृ0-1,11,13,14,16
16 https://www.culturalindia.net/indian-music/classical-singers/kumar-gandhar
17 https://kumarji.com/
18 https://thewire.in/culture/when-kumar-gandharva-fearlessly-sings-kabirs-formless-form
19 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
20 ’भक्ति काव्य से साक्षात्कार’, पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86
21 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
22 ’भक्ति काव्य से साक्षात्कार’, पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-86
23 ’भक्ति काव्य से साक्षात्कार’, पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-88
24 ’भक्ति काव्य से साक्षात्कार’, पालीवाल कृष्णदत्त, पृ0-89
25 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
26 http://ignca.nic.in/coilnet/kabir055.htm
27 ’कबीर साहेब की शब्दावली’ पहिला भाग, वर्ष-1922, इलाहाबाद, शब्द(1) पृ0-90
28 http://www.kabirproject.org/the%20films
29 http://www.kabirproject.org/the%20films/chalo%20hamara%20des
30 http://www.kabirproject.org/the%20films/had%20anhad
31 http://www.kabirproject.org/the%20films/kabira%20khada%20bazaar%20mein
32 http://www.kabirproject.org/the%20films/koi%20sunta%20hai
33 http://www.kabirproject.org/music%20with%20books
34 http://www.kabirproject.org/music%20with%20books/thumri%20mein%20kabir

A COMPARATIVE STUDY OF CARDIOVASCULAR EFFICIENCY ON SEDENTARY PEOPLE, REGULAR WALKERS AND YOGA PRACTITIONERS

Dr.Ashish Kumar Dubey Assistant Professor in Physical Education Navyug P.G. College, Sultanpur, Uttar Pradesh
Dr. Santosh Kumar Assistant Professor in Physical Education, D.S.B. Campus Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

ABSTRACT

The purpose of the study was to compare the Cardiovascular efficiency among sedentary people, regular walkers and yoga practitioners. For this study 40 subjects from each group (sedentary people, regular walkers and yoga practitioners) making a total of one hundred & twenty subjects were selected from the people of all the (five) regions of Utter Pradesh. First group consisted of the subjects, who were regularly undergoing walking for at least 30 to 45 minutes since last three years, second group consisted of the subjects, who were regularly practicing yoga for 30 to 45 minutes since last three years and third group consisted of sedentary people. The age of the subjects ranges from 50 to 55 years. Cardio vascular efficiency was measured by Harvard step test. The data pertaining to this variable had been analysed by using the descriptive statistics i.e., mean & Standard deviation, one way analysis of variance (ANOVA) to find out the significant difference among the means. In case of significant difference then post-hoc test (LSD) was applied in order to determine the significant difference between the paired means. In all the cases, 0.05 significance level was used to test the significance. The result of the present has revealed that there was no significant difference was found between regular walker & yoga practitioners in the dimensions of Cardio-vascular efficiency and significant difference were found between sedentary people & regular walkers and significant difference existed between Sedentary people and yoga practitioners.

KEY WORDS: Cardiovascular efficiency, sedentary people, regular walkers, yoga practitioners

INTRODUCTION

Physical fitness is not only one of the most important keys to a healthy body; it is the basis of dynamic and creative intellectual activity. The relationship between the soundness of the body and the activities of the mind is subtle and complex. Much is not yet understood. But we do know what the Greeks knew that intelligence and skills can only function at the peak of their capacity when the body becomes healthy and strong; then hardy spirits and tough minds usually inhabit a sound body. (John E. Walsh; 1978)[1]. Yoga regards the physical body as an instrument for his journey towards perfection. Yogic exercise not only develops the body but also broadens mental facilities. More ever, yoga acquires mastery over the involuntary muscles of different organs. The fundamental difference between yogic exercise and ordinary physical exercise is that physical exercise emphasis violent movement of the muscle, whereas yogic exercise opposes violent muscle movement as they causing fatigue. In the yogic system, all movements are slow and gradual with proper breathing and relaxation. Yogic exercise pays great attention to the spinal column and other joints. More ever they maintain an even supply of blood to every part of the body. Yogic exercises also do play an important role in the mobilization of the joint and efficiency of the cardiorespiratory system (Swami Kuvalyananda; 1971)[2] . In order to update and clarify the 1995 recommendations on the categories and amounts of physical activity required by healthy adults to enhance and maintain health, associate degree updated report on physical activity and public health, a circulation was revealed in August 2007. The researchers determined that intermittent furthermore as sustained activity may be useful. In alternative words, on days once you cannot fit in a 30-minute walk, you'll be able to still garner fitness edges by taking 2 or shorter walks squeezed in throughout the day. this might appear somewhat confusing to those that ar well conversant in previous recommendations to exercise for a sustained amount of twenty to hour. sweat for a sustained amount of your time remains the most effective method we all know to create enhancements in cardio-respiratory fitness. except for several, sweat for long periods of your time may be daunting. And most United States of America

 Copyright @ 2021 Authors

|folks |people} expertise days once unforeseen events throw off our schedules and stop us from having a solid block of your time for exercise. important health edges may be complete by merely ceasing to sit down and getting down to move. the chance of developing cardiopathy, high pressure level, non-insulin-dependent diabetes mellitus, and colon and breast cancers may be reduced simply by turning into a lot of physically active (W.L. Haskell; 2007)[3]. Walking is wide counseled for its health edges. in line with a recent U.S. physician General report on physical activity and health in America, over 1/2 the U.S. population doesn't participate frequently in any style of exercise and twenty-five % of the adult populations aren't active the least bit. Moreover, though many of us have sky-high commenced vigorous exercise programs at only once or another, most don't sustain their participation. That physical inactivity will result in poor health. The physician General urged Americans to "get in form," encouraging everybody to induce a minimum of common fraction hour of moderately vigorous activity (such as brisk walking) every day. the most recent recommendations recommend that you simply ought to try and walk 2 miles at a brisk pace of 3 to four miles per hour nearly on a daily basis. it's progressively obvious that one amongst the most effective ways that to keep up physiological state is thru physical activity. Regular participation in exercise has been shown to be useful within the hindrance of such killers as cardiopathy, cancer, and polygenic disorder. Exercise additionally helps to manage weight. and since exercise helps to strengthen muscles and bones, it will even decrease your risk of developing diseases like pathology and inflammatory disease (N.C.C.D.P. & H.P; 1999)[4] . It is concerned with the development and maintenance of the fitness components that can enhance health through the prevention and remediation of disease and illness. Health-related fitness enhances one’s ability to function efficiently and maintain a healthy lifestyle. Thus health-related fitness is important for all individuals throughout life (A. Deborah Wuest; 1991)[5].

The purpose of the study was to compare the cardiovascular efficiency among sedentary people, regular walkers, and yoga practitioners.

OBJECTIVES

Following objectives set for the study:

- To study the cardiovascular efficiency of different group of peoples
- To analyses their life style

METHODOLOGY

The 40 subjects from each group (sedentary people, regular walkers and yoga practitioners) making a total of one hundred & twenty subjects were selected from the people of all the (five) regions of Utter Pradesh. First group consisted of the subjects, who were regularly undergoing walking for at least 30 to 45 minutes since last three years, second group consisted of the subjects, who were regularly practicing yoga for 30 to 45 minutes since last three years and third group consisted of sedentary people. The age of the subjects ranges from 50 to 55 years. Cardio vascular efficiency was measured by Harvard step test. The data was been analyzed by using the descriptive statistics i.e. mean & Standard deviation, one way analysis of variance (ANOVA) to find out the significant difference among the means. In case of significant difference, post-hoc test (LSD) was applied in order to determine the significant difference between the paired means. The F-value was set at 0.05 level. All statistical function was performed by the use of SPSS v.16 software.

TABLE- 1 Descriptive Statistics of sedentary people, regular walkers and yoga practitioners.

Variables	**Groups**	**N**	**Mean**	**Std. Deviation**	**Std. Error**
Cardio vascular efficiency	Sedentary People	40	47.0480	9.80975	1.55106
	Regular Walker	40	55.2945	10.46473	1.65462
	Yoga. Practitioner	40	51.5517	9.22277	1.45825

Table-2 Analysis of Variance of sedentary people, regular walkers and yoga practitioner

Copyright @ 2021 Authors

Variables	S. V.	Sum of Squares	df	Mean Square	F
Cardio vascular efficiency	Between Groups	1363.956	2	681.978	**7.036***
	Within Groups	11341.246	117	96.934	

Since Tabulated F 0.05 (2, 117) = 3.06, Hence there is a significant difference was existed in cardiovascular efficiency.

Table-3 Least Significant Difference (LSD) post hoc test for the paired means among sedentary people, regular walkers and yoga practitioners.

Variables	Sedentary People	Regular Walkers	Yoga Practitioners	Mean Difference	Sig.
Cardio vascular efficiency	47.0480	55.2945		8.246*	0.000
		55.2945	51.5517	3.742	0.092
	47.0480		51.5517	4.503*	0.043

***Significant at 0.05 level of confidence.**

Figure 1 Graphical representation of the Comparison of Means of sedentary people, regular walkers and yoga practitioners in relation to Cardio vascular efficienc

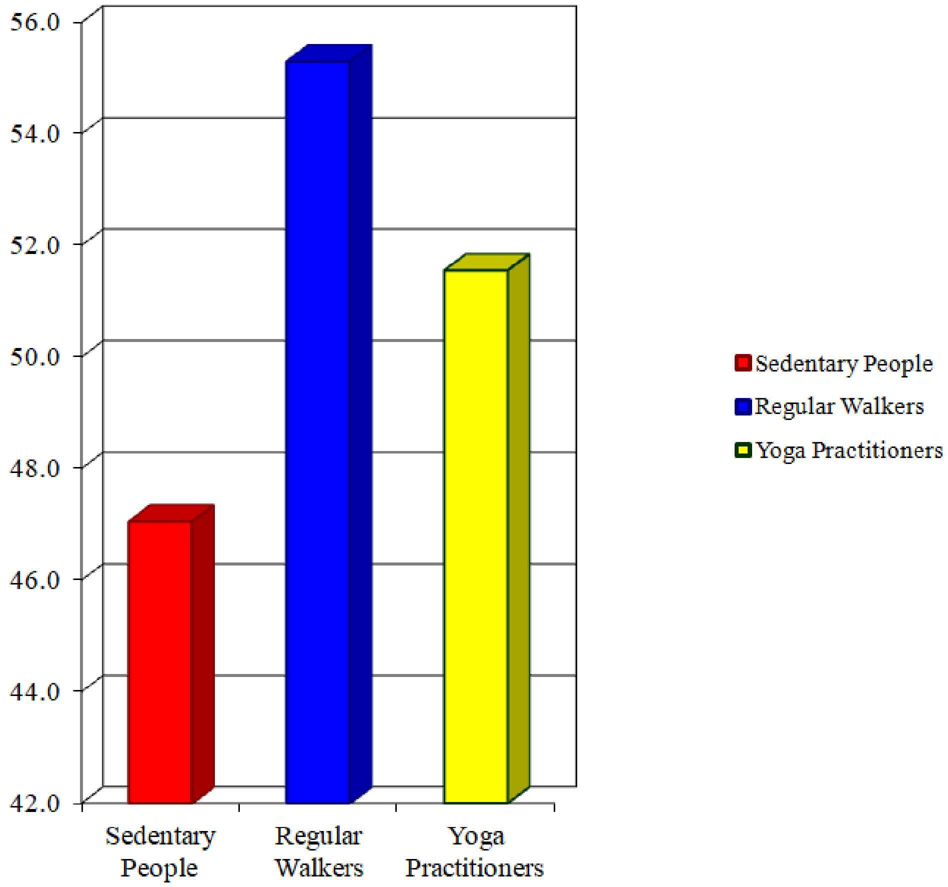

RESULT AND DISCUSSION

Cardio-Vascular Efficiency

In the dimension of Cardio-vascular efficiency, a significant difference existed between Sedentary people & Regular walkers and Sedentary people & Yoga practitioners, whereas a significant difference was not found between Regular walkers & Yoga practitioners. It was also observed that regular walkers had better Cardio-vascular efficiency comparing to Yoga practitioners and Sedentary People. This finding is supported by Ganguly and Gharote[5], Nandi and Adhikari[6], Chen T.L.[7] and Ravi Kumar[8].

Copyright @ 2021 Authors

Walking & Yoga probably puts an appropriate load on the Cardio-vascular system, as a result of which Cardio-vascular efficiency is increased in Regular walkers & yoga practitioners up to a higher-level Comparing to Sedentary people.

REFERENCES

1. President John F. Kennedy, "**A Statement" Quoted by John E. Walsh, The First Book of Physical Fitness",** (New York : Franklin Watts, 1978), pp. 5-6.
2. Swami Kuvalyananda, **Asana,** (Bombay; Popular Prakashan, 1971), P.16.
3. W.L. Haskell, et.al, Physical activity and public health: updated recommendation for adults from the American College of Sports Medicine and the American Heart Association, **Medicine & Science in Sports & Exercise**, August 2007, Vol. 39, pp. 1423–1434.
4. "**A Report of the Surgeon General, Physical Activity and Health, Division of Nutrition and Physical Activity",** N.C.C.D.P.&H.P., C.D.C.&P., U.S. Department of Health and Human Services, Historical Document, November 17, 1999, p. 11.
5. A. Deborah Wuest, Charles A. Bucher, **Foundations of Physical Education and Sports**, (St.Louis: C.V. Mosby Publisher,1991), p. 19
6. Ganguly, S.K., M.L. Gharote and K. Jolly, "Immediate effect of Kapalbhati on Cardio-respiratory endurance", **Yoga mimamsa,** 1989, Vol. 28, No. l, pp. 1-7.
7. Nandi, S. and H. Adhikari, "The Effect of Selected Yogic Practises on Cardio-Respiratory Endurance of School Boys", **Abstracts, 3rd International Conference Yoga Research and Tradition,** 1999.
8. Chen, TL, Mao, HC, Lai, CH, Li CY, Kuo CH, "The effect of yoga exercise intervention on health related physical fitness in school-age asthmatic children", **Hu Li ZaZhi, The Journal of Nursing,** April 2009;56(2):42-52.
9. Ravikumar, H, "Effect of Select Yogic Practices and Aerobic Exercises on Somato type Components and Its Relationship with Health Related Physical Fitness and Biochemical Variables," **Unpublished Doctoral Thesis**, Pondicherry University, Pondicherry, 2009.

 Copyright @ 2021 Authors

RELATIONSHIP OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND MENTAL HEALTH BETWEEN YOGIC AND NON-YOGIC FEMALE STUDENTS

Dr. Manju Adhikari

Asso. Professor, Department of physical education, Faculty of Education Swami Vivekanand Subharti University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Neena Baliyan

Research scholar, M.A. Yoga, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut

Dr. Santosh Kumar

HOD, Department of Physical education, D.S.B Campus, Kumaun University, Nanital

ABSTRACT:

In recent years' emotional intelligence and mental health are recently seen as a hot research topic among researchers. Emotional intelligence includes both you and the surroundings, thus affects both social and occupational dysfunction. Lack of emotional intelligence and worsen mental health reflects on reduced or even lost lethargy, lack of motivation, taciturn and cognitive disablement. The goal of this study is to assess emotional intelligence and mental health of yogic and non-yogic female students and their comparative analysis. 100 female individuals of the Swami Vivekananda Subharti University (SVSU), Meerut, India were invited to participate. Out of 100 female individuals 50 yogic female individuals were from bachelor of naturopathy and yogic science department, SVSU and 50 non-yogic female individuals were from fine arts department, SVSU. The age of female participant was from 18-25 years. The emotional intelligence and mental health questionnaire instruments were identified that best suits for our study. After this the questionnaires were distributed to all female individuals. A certain time limit was fixed for all to fill the questionnaires. The answers of those items which tallied with the answers given in the scoring key, they were given a score of +1. If they didn't tally, they were given a score of zero. The t-test was applied for the analysis of data obtained from the subjects on selected variables having significant level at 0.05.Emotional Intelligence of yogic female students was found better in comparison of non-yogic students and the Mental Health of yogic female students was found better in comparison of non-yogic students at 0.05 level of significance. The comparative study could be further analyzed for other groups, but this work is limited to yogic and non-yogic female students only.

KEYWORDS: Emotional intelligence, Mental health, Yogic and Non-yogic students

INTRODUCTION:

In recent years' emotional intelligence and mental health are recently seen as a hot research topic among researchers. Several studies are done to understand one's behavior and their mental health. Worsening of mental health leads to stress and anxiety that may lead to psychiatric chaos. Emotional intelligence includes both you and the surroundings, thus affects both social and occupational dysfunction. Lack of emotional intelligence and worsen mental health reflects on reduced or even lost lethargy, lack of motivation, taciturn and cognitive disablement. According to the global health observatory of world health organization (WHO) per 100000 populations, suicidal rate due to mental health is 10.5. Only less than 2%, considering the median value of the global health budget is spent on mental health. This is worse considering that only 9 median number health

workers per 100000 population working, leading to worse human resources available for this. This large scale growth related to emotional intelligence and mental health is indispensable to insight apprehension and deficient outcomes from the same. Apart from clinical reclamation procedures, yoga is a supplement ministration that is fruitful. This avail is seen across various aspects of the emotional intelligence and mental health. Yoga prefers a connote to reduce the physiological as well as psychological responses to emotional intelligence and mental health. Yoga has its genesis in ancient India.

METHODS AND MATERIAL

100 female individuals of the Swami Vivekananda Subharti University (SVSU), Meerut, India were invited to participate. Out of 100 female individuals 50 yogic female individuals were from bachelor of naturopathy and yogic science department, SVSU and 50 non-yogic female individuals were from fine arts department, SVSU. All female individuals who were included for participation ranges from 18-25 years.

After selecting the sample size of 100 female individuals comprising of 50 yogic and 50 non-yogic female individuals, the emotional intelligence and mental health questionnaire instruments were identified that best suits for our study. For the emotional intelligence instrument, questionnaire set by Dr. Arun Kumar Singh and Dr. Shruti Narain were chosen. For the mental health instrument, questionnaire set by Dr. Arun Kumar Singh and Dr. Alpana Sen were chosen. After this the questionnaires were distributed to all female individuals. A certain time limit was fixed for all to fill the questionnaires. Before this an oral explanation related to answering method was given.

Emotional Intelligence provides four separate dimensions of emotional intelligence, viz Understanding Emotions, Understanding Motivation, Empathy, and Handling Relations. Each item is provided with two alternative responses will be obtained on text booklet itself. There was time limit of 15 minutes to respond all the items. The research scholar supervised the group and verifies that they were responding in a desired way.

SCORING

The answers of those items which tallied with the answers given in the scoring key, they were given a score of +1. If they didn't tally, they were given a score of zero. The scoring key is provided in table 1.

Table 1: EMOTIONAL INTELLIGENCE SCORING TABLE

Qualitative Interpretation

Sr. No.	Dimensions	Items	Serial wise Items No.	TOTAL	
I.	Understanding emotions	Positive	5,15,18,28	4	
		Negative	-	-	
II.	Understanding emotions	Positive	3,7,9,12,16,19	6	
		Negative	20,21	2	
III.	Understanding emotions	Positive	6,8,10,23,25,26,29,31	8	10
		Negative	13,17	2	
IV.	Understanding emotions	Positive	1,2,4,11,14,22,24,27,30	9	9
		Negative	-	-	
				Total	31

The obtained final score on emotional intelligence scale can also be qualitatively interrelated with the help of table 2.

Table 2: Qualitative Interpretation of Emotional Intelligence Scale Scores

Range of Score	Interpretation
20 or less	Low Emotional Intelligence
21 to 26	Average Emotional Intelligence
27 and above	High Emotional Intelligence

QUESTIONNAIRE FOR MENTAL HEALTH

This Mental Health Battery provides six indices of Mental Health, viz Emotional Stability, over all Adjustment, Autonomy, Security-Insecurity, Self-concept, and Intelligence. Each item is provided with two alternative responses will be obtained on text booklet itself. There was the time limit of 25 minutes to respond all the items. The research scholar supervised the group and verifies that they were responding in a desired way.

SCORING

The scoring of Mental Health Battery comprises of two section- Section A and Section B. In section A, Item no. 1 to 4 of preliminary information should be given weight to determine socio-economic status of the examinee. A,B,C,D of item no. 2,3,4 each should be given score of 1,2,3,4 respectively whereas A,B,C,D,E of item no. 1 should be given a score 5,4,3,2,1 respectively. Scores earned should be added together to yield final total score and finally, SES should be judged as table 3.

Table 3: SOCIO ECONOMIC STATUS SCORE

15-17 = Upper SES
9-14 = Middle SES
8 or Below = Low SES

In section B the answers of those items (in each part) which tally with the answers given in the scoring key would be given a score of +1. If they don't tally, they will be given a score of zero.

Table 4: mental health scoring table

PART I	Item Nos.	6, 11, 13	Yes
	Item Nos.	1, 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 12, 14, 15	No
PART II	Item Nos.	16, 19, 22, 26, 27, 30, 35, 37, 40, 41, 42, 43, 47, 49, 50, 52, 53	Yes
	Item Nos.	17, 18, 20, 21, 23, 24, 25, 28, 29, 31, 32, 33, 34, 36, 38, 39, 44, 45, 46, 48, 51, 54, 55	No
PART III	Item Nos.	58, 60, 61, 62, 63, 65, 66	A
	Item Nos.	56, 57, 59, 64, 67, 68, 69, 70	B
PART IV	Item Nos.	71, 72, 73, 74, 75, 77, 79, 80, 82	Yes
	Item Nos.	76, 78, 81, 83, 84, 85	No
PART V	Item Nos.	86, 87, 88, 89, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 100	Right
	Item Nos.	90, 98, 99	Wrong
PART	Item Nos.	101, 105, 106, 109, 113, 117, 125, 127	A

VI	Item Nos.	107, 108, 110, 115, 118, 119, 120, 122, 123, 124, 126, 128, 129	B
	Item Nos.	103, 104, 114, 121	C
	Item Nos.	102, 111, 112, 116, 130	D

A five-point qualitative criterion has been developed by classifying sample with respect to their mental health.

P_{90} and above	Excellent Mental Health
P70 to P89	Good Mental Health
P50 to P69	Average Mental Health
P30 to P49	Poor Mental Health
Below P_{29}	Very Poor Mental Health

The t-test was applied for the analysis of data obtained from the subjects on selected variables having significant level at 0.05.

RELIABILITY OF DATA FOR EMOTIONAL INTELLIGENCE

The test re-test reliability was calculated, by administrating the test on the same sample (N=100) with a gap of fortnight. It was found to be 0.86 alpha coefficients, which was significant at .01 level of significance.

RELIABILITY OF DATA FOR MENTAL HEALTH

Both temporal stability reliability and internal consistency reliability of Mental Health Battery were computed. The details are given in Table 5.

Table 5: Reliability Coefficient of Mental Health Battery

Part	Area	Mean Age	N	Test-retest reliability	Odd-even (whole length) reliability
I.	Emotional Stability	15.6 Yrs.	102	r_u=.876	r_u=.725
II.	Over-all Adjustment			r_u=.821	r_u=.871
III.	Autonomy			r_u=.767	r_u=.812
IV.	Security0Insecurity			r_u=.826	r_u=.829
V.	Self-Concept			r_u=.786	r_u=.861
VI.	Intelligence			r_u=.823	r_u=.792

***Here all correlation values were significant (P < 0.1)**

VALIDITY OF DATA FOR EMOTIONAL INTELLIGENCE

The present scale was correlated against the Emotional Intelligence Scale developed by Hyde, Pethe, and Dhar (2001). The concurrently validity was found to be 0.86, which was significant at .01 level. For this purpose, both scales had been administrated on the same sample (N=100).

VALIDITY OF DATA FOR MENTAL HEALTH

Mental Health Battery validated against the different tests developed earlier. Part 1 of Mental Health Battery was validated against High School adjustment Inventory (HSAI) developed earlier by Singh and Sen Gupta(2007) and Hindi adaptation of Bell's Adjustment Inventory by Mohsin, Shamshad and Jehan (2012). For part 3 and part 5 construct validity was computed. Part 4 was validated against Neuroticism Scale of MPI as adapted by Jalota and Kapoor. Likewise, part 6 was validated against Jalota Group Genral Mental Ability Test(1976). Only relevant parts of Mental

Health Battery with suitable criteria were given to the random sample of 102. The standard instructions of the test and the criteria were followed. The details are given in Table 6 .

Table 6: Validity Coefficients of Mental Health Battery

Mental Health Battery parts	N	Concurrent Validity	Mental Health Battery parts	N	Construct Validity
Part I : ES	02	.673*	Part III : AY	102	.681*
Part II : QA		.704*			.601*
Part IV : SI		.821*	Part V : SC		
Part VI : IG		.823*			

RESULTS

Table 7 revealed that the comparison of emotional intelligence between yogic and non-yogic female students of Swami Vivekananda Subharti University, Meerut. The average score of the data pertaining to Emotional Intelligence of yogic and non- yogic female students were 23.72 and 21.18 respectively. Table 7 also revealed that the significant difference was found between yogic and non-yogic female students at 0.05 level of significance. Calculated t-value was higher than the required table value.

Table 7: comparison of emotional intelligence between yogic and non-yogic female students

Emotional Intelligence	No of Subjects	Mean	SD	t Score	Significant Difference
Yogic Female Students	50	23.72	3.86	-2.93	YES
Non-Yogic Female Students	50	21.18	4.77		

Here the Significant at .05 level of confidence and d.f (98) = 1.98 is considered. Analysis of the data shows that the Emotional Intelligence of yogic female students was found better in comparison of non-yogic students. Table 8 revealed that the comparison of Mental Health between yogic and non-yogic female students of Swami Vivekanand Subharti University, Meerut. The average score of the data pertaining to Mental Health of yogic and non- yogic female students were 77.72 and 70.80 respectively.

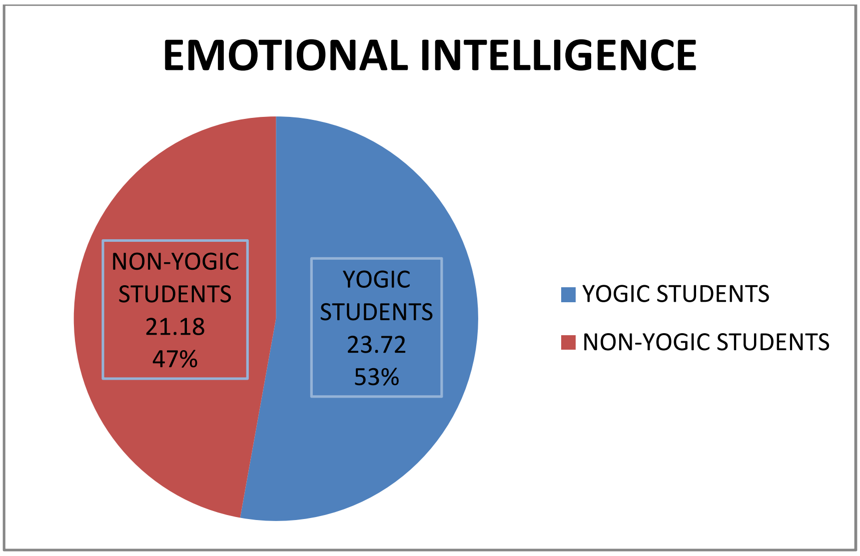

Table 8: COMPARISON OF MENTAL HEALTH BETWEEN YOGIC AND NON-YOGIC STUDENTS

Mental Health	No of Subjects	Mean	SD	t Score	Significant Difference
Yogic Female Students	50	77.72	11.16	-3.40	YES
Non-Yogic Female Students	50	70.80	9.053		

Here the Significant at .05 level of confidence and d.f (98) = 1.98 is taken. Table 8 also revealed that the significant difference was found between yogic and non-yogic female students act 0.05 level of significance. Calculated t-value was higher than the required table value. Analysis of the data interpreters that the Mental Health of yogic female students was found better in comparison of non-yogic students.

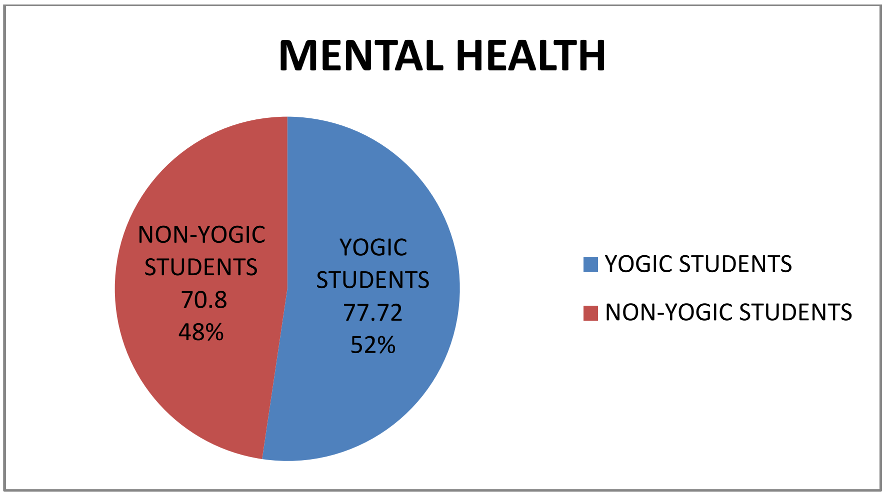

DISCUSSION:

The present investigation was designed to compare the Emotional Intelligence and Mental Health of the yogic and non-yogic female students. The Result of the study revealed that the Emotional Intelligence of yogic female students was found better in comparison of non-yogic female students. It might be due to that the yogic students mostly involves in physical activities. They regularly perform asanas and regular meditation. These activities help them to keep a better Emotional Intelligence. The result of present study is also on the line of the studies conducted by Pandit, S. A., & Satish, L. (2014), “Long term and short-term effects of yoga intervention among pre-adolescent children”, Li, G. S. F., Lu, F. J., & Wang, A. H. H. (2009), “Exploring the relationships of physical activity, emotional intelligence and health in Taiwan college students.” The Result of the study revealed that the Mental Health of yogic female students was found better in comparison of non-yogic female students. It might be due to that the yogic students mostly involves in physical activities. They regularly perform asanas and regular meditation. Meditation has positive effects on nervous system and cardio-vascular systems. These activities help them to keep a better Mental Health. The result of present study is also on the line of the studies conducted byKhalsa, S. B. S., Hickey-Schultz, L., Cohen, D., Steiner, N., & Cope, S. (2012), “Evaluation of the mental health benefits of yoga in a secondary school: a preliminary randomized controlled trial.” , Bostani,

M., &Saiiari, A. (2011), "Comparison emotional intelligence and mental health between athletic and non-athletic students."

Also On the basis of Review Related Literature, Expert's opinion and scholar's own understanding, it was hypothesized that there will not be a significant difference in Mental Health between Yogic and Non- Yogic female students. The result of the study showed that, there is a significance difference in Mental Health. Hence the previous Hypothesis was rejected, and Alternative Hypothesis is accepted at 0.05 level of confidence. Also there will not be a significant difference in Emotional Intelligence between Yogic and Non- Yogic female students. The result of the study showed that, there is a significance difference in Emotional Intelligence. Hence the previous Hypothesis was rejected, and Alternative Hypothesis is accepted at 0.05 level of confidence.

CONCLUSION:

In summary, comparison of Mental Health and Emotional Intelligence between yogic and non- yogic female students is performed. Based on the findings of the study, it has been observed that the mental health of yogic female students was found better in comparison of non- yogic female students. Also, Emotional Intelligence of yogic female students was found better in comparison of non- yogic female students. These findings will provide guide-line that needs to be examined for better emotional intelligence and mental health, which could be further examined for several other groups.

REFERENCES

1. Alfermann, D., & Stoll, O. (2000). Effects of physical exercise on self-concept and well-being. *International journal of sport psychology*.
2. Ardington, C., & Case, A. (2010). Interactions between mental health and socioeconomic status in the South African national income dynamics study. *Tydskrifvir studies in ekonomieenekonometrie= Journal for studies in economics and econometrics*, *34*(3), 69.
3. Aşçı, F. H. (2003). the effects of physical fitness training on trait anxiety and physical self-concept of female university students1. *Psychology of sport and exercise*
4. Beranuy, M., Oberst, U., Carbonell, X., &Chamarro, A. (2009). Problematic Internet and mobile phone use and clinical symptoms in college students: The role of Mental Health. *Computers in human behavior*, *25*(5), 1182-1187.
5. Berwal, S., &Gahlawat, S. (2013). Effect of yoga on self-concept and emotional maturity of visually challenged students: An experimental study. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*, *39*(2), 260.
6. Bostani, M., &Saiiari, A. (2011). Comparison Mental Health and mental health between athletic and non-athletic students. *Procedia-Social and Behavioral Sciences*, *30*, 2259-2263.
7. Ciarrochi, J., Deane, F. P., & Anderson, S. (2002). Mental Health moderates the relationship between stress and mental health. *Personality and individual differences*, *32*(2), 197-209.
8. Chu, L. C. (2010). The benefits of meditation vis-à-vis Mental Health, perceived stress and negative mental health. *Stress and Health: Journal of the International Society for the Investigation of Stress*, *26*(2), 169-180.
9. Davis, S. K., & Humphrey, N. (2012). Mental Health predicts adolescent mental health beyond personality and cognitive ability. *Personality and Individual Differences*, *52*(2), 144-149.
10. Dubey, S. N. (2011). Impact of yogic practices on some psychological variables among adolescents.
11. Extremera, N., & Fernández-Berrocal, P. (2006). Mental Health as predictor of mental, social, and physical health in university students. *The Spanish Journal of Psychology*, *9*(1), 45-51.
12. Falci, C. D. (2008). Gender trajectories of adolescent depressed mood: The dynamic role of stressors and resources. *Advances in Life Course Research*, *13*, 137-160.
13. Frank, J. L., Bose, B., &Schrobenhauser-Clonan, A. (2014). Effectiveness of a school-based yoga program on adolescent mental health, stress coping strategies, and attitudes toward violence: Findings from a high-risk sample. *Journal of Applied School Psychology*, *30*(1), 29-49.
14. Frank, J. L., Kohler, K., Peal, A., & Bose, B. (2017). Effectiveness of a school-based yoga program on adolescent mental health and school performance:
15. Gupta, G., & Kumar, S. (2010). Mental health in relation to Mental Health and self-efficacy among college students. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*, *36*(1), 61-67. Findings from a randomized controlled trial. *Mindfulness*, *8*(3), 544-553.

16. Gupta, R. (2014). Study on self-concept, academic achievement and achievement motivation of the students. *Journal of Humanities and Social Science*, *19*(5), 88-93.
17. Gururaja, D., Harano, K., Toyotake, I., & Kobayashi, H. (2011). Effect of yoga on mental health: Comparative study between young and senior subjects in Japan. *International journal of yoga*, *4*(1), 7.
18. Harkess, K. N., Delfabbro, P., & Cohen-Woods, S. (2016). The longitudinal mental health benefits of a yoga intervention in women experiencing chronic stress: A clinical trial. *Cogent Psychology*, *3*(1), 1256037.
19. Hendriks, T., de Jong, J., & Cramer, H. (2017). The effects of yoga on positive mental health among healthy adults: a systematic review and meta-analysis. *The journal of alternative and complement*
20. Hertel, J., Schütz, A., & Lammers, C. H. (2009). Mental Health and mental disorder. *Journal of Clinical Psychology, 65*(9), 942-954.
21. Khalsa, S. B. S., Hickey-Schultz, L., Cohen, D., Steiner, N., & Cope, S. (2012). Evaluation of the mental health benefits of yoga in a secondary school: a preliminary randomized controlled trial. *The journal of behavioral health services & research*, *39*(1), 80-90.
22. Kiyani, R., Mohammadi, A., &Sattarzadeh, L. (2011). The survey compares mental health and happiness of athlete and non-athlete employed people. *Procedia-Social and Behavioral Sciences*, *30*, 1894-1896.
23. Li, G. S. F., Lu, F. J., & Wang, A. H. H. (2009). Exploring the relationships of physical activity, Mental Health and health in Taiwan college students. *Journal of Exercise Science & Fitness*, *7*(1), 55-63.
24. Martins, A., Ramalho, N., & Morin, E. (2010). A comprehensive meta-analysis of the relationship between Mental Health and health. *Personality and individual differences*, *49*(6), 554-564.
25. Mikolajczak, M., Petrides, K. V., & Hurry, J. (2009). Adolescents choosing self-harm as an emotion regulation strategy: The protective role of trait Mental Health. *British Journal of Clinical Psychology*, *48*(2),
26. Oginska-Bulik, N. (2005). Mental Health in the workplace: Exploring its effects on occupational stress and health outcomes in human service workers. *International journal of occupational medicine and environmental health*, *18*(2), 167-175.181-193.
27. Ruiz-Aranda, D., Castillo, R., Salguero, J. M., Cabello, R., Fernández-Berrocal, P., &Balluerka, N. (2012). Short-and midterm effects of Mental Health training on adolescent mental health. *Journal of Adolescent Health*, *51*(5), 462-467.
28. Slaski, M., & Cartwright, S. (2003). Mental Health training and its implications for stress, health and performance. *Stress and health*, *19*(4), 233-239.
29. Steiner, N. J., Sidhu, T. K., Pop, P. G., Frenette, E. C., & Perrin, E. C. (2013). Yoga in an urban school for children with emotional and behavioral disorders: A feasibility study. *Journal of Child and Family Studies*, *22*(6), 815-826.
30. Taspinar, B., Aslan, U. B., Agbuga, B., &Taspinar, F. (2014). A comparison of the effects of hatha yoga and resistance exercise on mental health and well-being in sedentary adults: A pilot study. *Complementary therapies in medicine, 22*(3), 433-440.
31. Tavakolizadeh, J., Abedizadeh, Z., &Panahi, M. (2012). The Effect of Swimming on Self Concept's Girl High School Students. *Procedia-Social and Behavioral Sciences*, *69*, 1226-1233.
32. Telles, S. H. I. R. L. E. Y., Singh, N. I. L. K. A. M. A. L., Yadav, A. R. T. I., &Balkrishna, A. C. H. A. R. Y. A. (2012). Effect of yoga on different aspects of mental health. *Indian J PhysiolPharmacol*, *56*(3), 245-54.
33. Tsaousis, I., & Nikolaou, I. (2005). Exploring the relationship of Mental Health with physical and psychological health functioning. *Stress and Health: Journal of the International Society for the Investigation of Stress*, *21*(2), 77-86.
34. R.Gupta (2019), UGC-NET Yoga Paper-2p, 1,4,5,179
35. Swami Sivanand(2002), The Yoga Cook Book, p 11,15

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- X , ISSUE- IV May - 2022
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

Perception of Society towards Women Police

Paper Id : **16076** Submission Date : **09/05/2022** Acceptance Date : **19/05/2022** Publication Date : **25/05/2022**
For verification of this paper, please visit on http://www.socialresearchfoundation.com/researchtimes.php#8

Neha Gupta
Research Scholar
Dept. Of Sociology
D.S.B. Campus, Kumaun University
Nainital,Uttarakhand, India

Jyoti Joshi
Professor
Dept. Of Sociology
D.S.B. Campus, Kumaun University
Nainital, Uttarakhand, India

Abstract

Police-Public relation is a new concept and a relatively new area of study. The Police-Public relationship is a foremost issue that drewthe attention of enlightened police throughout the world. The concept of women police is entirely new. Traditionally work of the women is within the four wall of house.The most important social aspect of women police, viz., interaction between people and police is the subject matter of this study. This interaction between people and police determines to larger extent as to how adequate the police are and how people view the whole government system itself. This paper looks at the relation between the police and society. To explore the relationship between the police and society, 249 women police and 45 people from public have been taken. The result shows that the perception of society is encouraging towards women police.

Keywords Women, Police, Society.

Introduction

Police is a part of community and to serve the community the police exist. Good police public relations therefore, play a vital role in any society and more so in a democratic society like ours where the police needs the continuous support, respect and approval of the citizen for their functioning. Accordingly, a good community police relations programme which aims at emphasizing the mutual interdependence of the two in the maintenance of law and order as well as in the prevention and detection of crime is a necessity. Good program aims at developing natural respect and understanding between the police and the people and promotes an atmosphere conducive to greater public co-operation and eventual police effectiveness.

The concept of police-public relationship has gained a secure level of acceptance in the law enforcement establishment, this acceptance alone is a sign of progress, it is only a first step toward implementation, it is much easier to agree with the reasonableness and justice of a proposal than to implement it and live with the consequences of its implementation. Like most other organisation in this pattern, this might try to explain their programs and activates the public, for whose benefit these are intended. In a manner of speaking, this was just selling the police to the public in a planned effort to influence public opinion through socially acceptable performance, based on mutually satisfactory two-way communication.

Aim of study

The concept of police-public relationship has gained a secure level of acceptance in the law enforcement establishment, this acceptance alone is a sign of progress, it is only a first step toward implementation, it is much easier to agree with the reasonableness and justice of a proposal than to implement it and live with the consequences of its implementation. Like most other organisation in this pattern, this might try to explain their programs and activates the public, for whose benefit these are intended. In a manner of speaking, this was just selling the police to the public in a planned effort to influence public opinion through socially acceptable performance, based on mutually satisfactory two-way communication.

Review of Literature

1. According to Radelet, Police-Public relations means, The reciprocal attitude of the police and the public to the expected and performed tasks of the police and to involve general public relations, community services, and community participation.[1] 2. The British Institute of Public-Relations explained public relations as “the process of establishing and maintaining mutual understanding and appreciation between an organization and its public, through affective two-way communication. In this context, it is relevant to cite also the terse statement of William J. Boop, made a century and a half later that police cannot operate affectively without the willing cooperation and support of the public it serves.[2] 3. Chaturvedianalysed the status of police services, criminal administration in India, police practices in access to justice, police mission, corporate criminal liability, police system and organization in India. He has also

described The Police Act 1861 and policing in India and challenges of the future.[3] 4. Kowaleroski discussed about the police-community services. According to the study, the role of the police has come under close examination in recent years. Numerous debates have taken place concerning the role of police, with both professional practitioners and academicians offering their enlightened positions. The role of police represents a variety of functions to a variety of individuals. There are those who maintain that the police officer should be philosopher, guide, and friend or that the police officer should be a helper. Others strongly maintain that the line officers should be concerned with the preservation of peace, protection of life and property, enforcement of laws and detection of law breakers. The enforcement functions are also proposed as the only functions for police, it is considered they should not be called upon to perform other duties.[4] 5. Breci’s in his study of police has tried to find out whether the public still holds the stereotypical attitudes prevalent in the 70s and 80s about the capacity of female officers to deal with violence. It was concluded that while most people believe that women are as good as men in performing police duties. But there were some gender differences clearly perceived. Male police personnel characterized by aggressiveness, resourcefulness and bravery similarly while on the other hand women police personnel were identified with the characteristics like empathy, nurturing and sensitivity. [5] 6. Rowbothamargues that the traditional roles of women are perceived as inferior and the private world of home is regarded as feminine. Hence the integration of women into the public world of work is only partial. Oakley observes that the position of women in the family is reflected in the employment sector. She argues that women's roles are often the same in jobs outside home and at home which involve caring for, waiting on, serving, etc. Oakley argues that the major reason for the subordination of women in the labour market is the institutionalization of 'the mother-housewife role as the primary role for all women. Whatever relevant and latest literature review author got for this paper she has added that.

Methodology To achieve the objectives of the study Exploratory cum Descriptive Research Design has been taken.Census method has been taken to collect data. The census method can be applied in a situation where the separate data for every unit in the population is to be collected.As total number of women police employed in 14 police stations of Nainital District in the year 2018-2019 is 249.To find out the relationship between police and public, 45 people of different field of the society has been selected for the study purpose. The primary data have been collected with the help of interview schedule which is prepared comprising mixed questions both quantitative and qualitative. Non-participatory observation method is also used to collect the useful information.

Analysis

To examine the perception of society towards women police.

Table 1

Behaviour of general public towards women police

Response	Very Good	Good	Indifferent	Not so good	Bad	Total
Number of Respondents	1 (.40)	246 (98.80)	0 (0)	2 (.80)	0 (0)	249 (100)

The tabledepicts that 98.80% of women police said that the behaviour of the public towards them is good. The public behave very politely with them..40% of the respondents said that the behaviour of the public towards them is very good. Only .80% of the respondents said that the public is not so good to them.

Table 2

Behaviour of general public towards women police as compared to male police

Response	Superior	Equal	Inferior	Total

Number of Respondents	0 (0)	247 (99.20)	2 (.80)	100 (100)

The above table shows that the majority of respondents are of the opinion that the public think both male and women police are equal. Only .80% of the respondents said that the public think that the male police are superior to the female police.

Perception of Public towards Women Police

An attempt has been made to find out the image of women police in the eyes of general public. The following Table shows the responses.

Table 3

Role Efficiency of Women Police

Responses	Yes	No	Can't Say	Total
They work better in crimes related to women	40 (88.89)	0 (0)	5 (11.11)	45 (100)
They are not good in dealing with violent situations	29 (64.44)	9 (20.00)	7 (15.56)	45 (100)
They are good in public relation works	28 (62.22)	10 (22.22)	7 (15.56)	45 (100)

As observed in the table, there were 88.89% of the respondents who were of the opinion that women police deal the crime related to women in a better way. 64.44% of the respondents stated that women police are effective while dealing in the violent situations as they thought women police are physically tough to deal with violent situations. There are 62.22% of the respondents who were in profession who stated that women police are very good in public dealing. They are humble, soft and respectfully listen to their problems/complaints, which according to them, is not same in case of male police. In some cases respondents said that when they reach the women police for their problems, they helped them very much in solving their problems. This proves that women are better in public relation works/dealing. Rest few of the respondents had no opinion or they are not in the favour of the above asked question but from their body language and impressions it was clearly visible that they are of the opinion that police job are not meant for women. From this table it can be inferred that the image of women police are positive in the eyes of public. They preferred more and more women should join the department so that image of police improves further.

Table 4

Acceptance by the Society for Women in Police job

Responses	Yes	No	Can't Say	Total
Number of Respondents	38 (84.44)	0 (0)	7 (15.56)	45 (100)

Table shows the responses the question that whether women should be motivated

to join the police department. 84.44% of the respondents were of the opinion that women should be motivated as more and more women join the police it would become more gender balanced department. They also added that till date the ratio of male-female police personnel in police department is very low. In order to improve this ratio many states like Tamil Nadu, Delhi, Gujrat in India declared 33% reservation for women in police recently. They added that in our state same steps should be taken so that recruitment of more women in police force takes place. There are 15.56% of the respondents who remained silent on this question. They think that family support is very important behind the woman only then she can do any work otherwise it becomes challenging for her. Therefore, from this table it can be inferred that public generally accepts the idea of integration of more and more women in the police force.

Use of Language by Women Police

Table shows the opinion of the respondents about the use of polite language used by the police.

Table 5

Interaction with Society by Women Police

Responses	Yes	No	Can't Say	Total
Number of Respondents	36 (80)	7 (15.56)	2 (4.44)	45 (100)

The figures presented in Table indicate that in the opinion of 80% respondents said the police used polite language. There are 15.56% respondents who said that the police did not use polite language. The rest 4.44% did not express the views.

Findings

It has been found that the opinion of general public towards women police is good. People are accepting and acknowledging the entry of women into police department.

Conclusion

On the positive side, the respondents are of the opinion that women in police department prove their worth if proper opportunity is given to them. They excel more in this field. On the positive side large amount of respondents find women are suitable for police job. Thus they are able to perform their job effectively and efficiently.

References

1. Redelet, Louis A, 1980; Police and Community, Glence Publishing Co. Inc. California.
2. Boop, William J., 1970; Police Community Relationships, Spring Field, Illinois, U.S.A.
3. Chaturvedi, J.C., 2006; Police Administration and Investigation of Crime, Isha Books, Delhi.
4. Former Richard, E. and Kowaleroski Victor A., 1976; Law Enforcement and Community Relations, Restore Publishing Company, Virginia.
5. Breci. M. 1997; Female Officers on Patrol: Public Perceptions in the 1900s. Journal of Crime and Justice
6. Rowbotham Sheila. 1973; Hidden from History, 300 Years of Women's Oppression and the Fight Against it. New York: Pluto Press Publication.
7. www.nainital. nic.in
8. www.census2011.co.in